बीओआई
वार्ता
बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका
मार्च, 2024

विश्व हिन्दी दिवस 2024

विशेषांक

बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 13.02.2024 को बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, मुंबई का निरीक्षण किया गया। माननीय संसद सदस्यों ने बैंक ऑफ इंडिया के संयोजन में आयोजित निरीक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था की प्रशंसा की। बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक ने समिति के सदस्यों से निरीक्षण पूर्ण होने का प्रमाणपत्र प्राप्त किया और इस दौरान उनके साथ कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार भी उपस्थित रहे।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 13.02.2024 को बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, मुंबई का निरीक्षण किया गया। इस दौरान बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक ने राजभाषा प्रदर्शनी खंड का दौरा करते हुए बैंक ऑफ इंडिया के स्टॉल का जायज़ा लिया। इस दौरान उनके साथ कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार भी उपस्थित रहे।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 11.03.2024 को बैंक ऑफ इंडिया की पानीपत शाखा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान बैंक की ओर से श्री लोकेश कृष्ण, महाप्रबंधक, एफजीएम कार्यालय दिल्ली, श्री नवनीत कृष्णन, उप महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक, चंडीगढ़ अंचल, सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), प्रधान कार्यालय, श्री दीपेश, मुख्य प्रबंधक, पानीपत शाखा तथा श्री दलीप सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित रहे।

मुख्य संरक्षक
श्री रजनीश कर्नाटक
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक
श्री राजीव मिश्रा
कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक
श्री अभिजीत बोस
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक
श्री बिस्वजीत मिश्र
महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक
सुश्री मऊ मैत्रा
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक
डॉ. पीयूष राज, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

बैंक में जोखिम का प्रबंधन	07
प्रवासी भारतीयों के आँगन में हिन्दी	10
विश्व हिन्दी दिवस की उपयोगिता	13
भाषा, साहित्य और समाज	15
राजभाषा हिन्दी का महत्व, प्रचार-प्रसार और प्रासंगिकता	17
"तोहफा"	18
आर्थिक विकास एवं मंहगाई - प्रबंधन एवं चुनौतियाँ	20
स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका	24
वित्तीय समावेशन की अवधारणा और आर्थिक विकास के लिए इसका महत्व	27
स्वप्न संयोग	29
कार्यनिष्पादन में वृद्धि हेतु कार्य स्थल पर सकारात्मक वातावरण की भूमिका	31
चित्र काव्य प्रतियोगिता	32
बैंकरों के लिए स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने के उपाय	33
पुस्तक समीक्षा: हल्दीघाटी : स्वाधीनता की लड़ाई की अमर गाथा	35
कुछ रोचक बातें...	37

प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

बीओआई वार्ता के नए अंक के माध्यम से आप सभी को पुन: संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। वित्तीय वर्ष' 2023-24 का समापन हो चुका है और नया वित्तीय वर्ष 2024-25 शुरू हो चुका है। आप सभी के अथक परिश्रम और लगन के बलबूते पिछले वित्तीय वर्ष में हमारे बैंक ने अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की हैं। हमारा कुल वैश्विक मिश्रित कारोबार रु. 13 लाख करोड़ को पार कर गया। कुल घरेलू मिश्रित कारोबार रु. 11 लाख करोड़ से अधिक हो गया। कुल घरेलू जमाराशियाँ रु. 06 लाख करोड़ से अधिक हो गई और कुल विदेशी मिश्रित कारोबार रु. 02 लाख करोड़ के आंकड़े को पार कर गया।

बैंक के कारोबार में निरंतर वृद्धि के लिए सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। हमारी ये उपलब्धियाँ आप सभी की निष्ठापूर्ण मेहनत और लक्ष्यों की प्राप्ति पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए, श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने का साक्ष्य हैं। इस वर्ष हमारा ध्येय कारोबार वृद्धि की निरंतरता को बनाए रखते हुए, बैंकिंग में भावी संभावनाओं को साकार करना है। बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के मद्देनजर हमें कारोबार के विभिन्न पैरामीटरों जैसे कारोबार मिश्र, अग्रिमों, जमाराशियों, कासा, परिचालन लाभ और निवल लाभ में वृद्धि करते हुए ग्राहकों को निरंतर उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवानी हैं।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान हमारे बैंक के विभिन्न कार्यालयों ने राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करते हुए पुरस्कारों की संख्या में निरंतर वृद्धि दर्ज़ की है। हमारे बैंक के स्टाफ सदस्यों ने विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए अनेक पुरस्कार जीते हैं। इस हेतु सभी स्टाफ सदस्य बधाई के पात्र हैं। सभी स्टाफ सदस्य अपने दैनिक कामकाज में हिन्दी एवं स्थानीय भाषाओं के उपयोग को प्राथमिकता दें। ग्राहकों को उनकी भाषाओं में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाने से बैंक के साथ उनका रिश्ता गहन होता है। पिछले वित्तीय वर्ष की उपलब्धियों के लिए आपको साधुवाद देते हुए, मैं उम्मीद करता हूँ कि हम वित्तीय वर्ष 2024-25 में कारोबार के सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़कर नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

'बीओआई वार्ता' के इस अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका 'बीओआई वार्ता' में बैंकिंग और भाषा साहित्य का समावेश आकर्षक ढंग से किया गया है। पत्रिका का यह अंक विश्व हिन्दी दिवस को समर्पित है। दार्शनिक 'कनकदास' का कथन है कि भाषा, उसे उपयोग करने वालों की संस्कृति का रोडमैप होती है, भाषा से यह उजागर हो जाता है कि हमारा सांस्कृतिक विकास कहाँ से शुरू हुआ और किस दिशा में जा रहा है। आज दुनिया के विभिन्न देशों में सबसे ज्यादा प्रवासी भारत से हैं जो हमारी संस्कृति और भाषाओं को विश्व में पहचान दिला रहे हैं। जिस गति से वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का प्रभाव बढ़ रहा है उसी गति से हिन्दी का प्रभाव भी विश्व में बढ़ रहा है।

हमारे बैंक में राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने में 'बीओआई वार्ता' की भूमिका महत्वपूर्ण है। 'बीओआई वार्ता' स्टार परिवार के सभी सदस्यों को बैंकिंग से संबंधित या जीवन के अन्य पहलुओं से संबंधित विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए एक प्लैटफॉर्म उपलब्ध करवाती है। इस अंक में विभिन्न अंचलों द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर किए गए आयोजनों की फोटो कवरेज यह दर्शाती है कि हमारा बैंक उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाने के साथ-साथ देशभर में विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक दायित्वों का निर्वहन भलीभाँति करता है।

सभी स्टाफ सदस्यों को गृहपत्रिकाओं, विभिन्न सांकृतिक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं आदि में प्रतिभागिता करते रहना चाहिए, क्योंकि इनके माध्यम से हमारी प्रतिभा और व्यक्तित्व में निखार आता है। बैंकिंग जैसे व्यवसाय में अच्छा व्यक्तित्व और भाषा कौशल आपके करियर के उत्थान में तो लाभकारी है ही, साथ ही ग्राहकों में भी हमारे बैंक की बेहतर छवि का निर्माण करता है।

आप सभी से नए वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए आग्रह करते हुए, मैं इस तिमाही में आने वाले त्यौहारों यथा बुद्ध पूर्णिमा, ईद आदि के लिए आपको शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ....

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

आज बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के माध्यम से पहली बार आप सभी से जुडने का अवसर मेरे लिए प्रसन्नतादायक है। मैं पाठकों को 'विश्व हिन्दी दिवस' से संबंधित पत्रिका का यह विशेषांक समर्पित करता हूँ। विश्व हिन्दी दिवस हमें यह बताता है कि हमारे देश की राजभाषा हिन्दी भौगोलिक परिधियों से बंधी हुई नहीं है, अपितु आज के आधुनिक युग में फलफूल रहे वैश्विक बाज़ार में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। दुनिया भर में हिन्दी भाषा के विस्तार का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुनिया के सभी मल्टीनेशनल ब्रांड, मीडिया, सिनेमा आदि द्वारा हिन्दी को तेजी से अपनाया जा रहा है। विश्वभर से लोग भारत में आकर पर्यटन, योग, स्वास्थ्य और आध्यात्म सीख रहे हैं। प्रवासियों के रूप में भारत के लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। भारत का आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विस्तार हिन्दी को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

पत्रिका के इस अंक में हिन्दी की वैश्विक उपस्थिति आदि से संबंधित विषयों के अलावा बैंकिंग, तकनीक, पुस्तक समीक्षा, कहानी और काव्य आदि को शामिल किया गया है। पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाएँ संपादक मण्डल को अधिक ऊर्जा प्रदान करती हैं। हमारा प्रबुद्ध शीर्ष प्रबंधन हमें निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे संपादकीय टीम का मनोबल बढ़ता है। हम 'बीओआई वार्ता' में विभिन्न विषयों पर सृजनशील साहित्य भेजने वाले स्टाफ सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं।

उम्मीद करता हूँ कि 'बीओआई वार्ता' का यह विशेषांक आपको पसंद आएगा। इस अंक के बारे में आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएँ पाने की हमें हार्दिक अभिलाषा है। आपके बहुमूल्य विचार ही हमें और अधिक सृजनशील बनाने के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। अत: आप अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करवाएँ।

भवदीय,

बिस्वजीत मिश्र

(बिस्वजीत मिश्र)

अपने विभाग को जानिए श्रृंखला - जोखिम प्रबंधन विभाग

बैंक में जोखिम का प्रबंधन

आनंद शेखर आर.
मुख्य प्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया
जोखिम प्रबंधन विभाग

प्रधान कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक के अधीन जोखिम प्रबंधन विभाग कार्यरत है। बैंकिंग गतिविधियों में अनिश्चितताओं और नुकसान होने की संभावनाओं के कारण सभी वित्तीय परिचालनों में जोखिम का पुट बना रहता है। बैंक के परिचालन को सुचारु बनाए रखने के लिए इन जोखिमों का सही ढंग से प्रबंधन किया जाना जरूरी होता है। बैंकिंग व्यवस्था में जोखिम को समझने और उसके स्तर का आकलन करने के लिए उसे अनेक प्रकारों में विभक्त किया गया है जैसे- क्रेडिट जोखिम, बाज़ार जोखिम, नकदी जोखिम, परिचालन जोखिम आदि। जोखिम प्रबंधन विभाग का काम इन सभी जोखिमों की पहचान करना, आकलन करना और फिर उनका प्रबंधन करना होता है। नियामकीय या विधिक अनुपालन, तरलता को बनाए रखने, क्रेडिट जोखिम के लिए फ्रेमवर्क बनाने, बैंक की साख का ध्यान रखने आदि के लिए जोखिम प्रबंधन विभाग की विभिन्न इकाइयों (डेस्क) को बेहतरीन तालमेल के साथ अपना कार्य करना होता है। जोखिम प्रबंधन विभाग बैंक की पसलियों की तरह होता है जिसकी सुरक्षा में बैंक का दिल धड़कता रहता है और साँसे निर्बाध रूप से चलती रहती हैं।

प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ बैंकिंग उद्योग जिस गति से आगे बढ़ रहा है, उसी गति से वित्तीय जोखिमों का दायरा भी बड़ा होता जा रहा है। आज के परिवर्तनशील युग में प्रत्येक बैंक का जोखिम प्रबंधन विभाग (आरएमडी) वित्तीय स्थिरता के प्रति एक समर्पित संरक्षक के रूप में कार्यरत है। आरएमडी बैंक की वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा के लिए जोखिम शमन कार्यनीतियों को लयबद्ध करते हुए एक धुरी के रूप में कार्य करता है। आरएमडी के भीतर, विशेषीकृत डेस्कों का एक समूह तालमेल बनाकर काम करता है, प्रत्येक डेस्क जोखिमों के बदलते परिदृश्यों को भांपकर उनसे बचाव करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आरएमडी का केंद्रबिन्दु एंटरप्राइज जोखिम प्रबंधन डेस्क है, जो बैंक के व्यापक जोखिम प्रबंधन के लिए बने फ्रेमवर्क को लागू करता है। यह डेस्क जोखिम वहन करने की क्षमता से संबंधित फ्रेमवर्क को तैयार करके कार्यान्वित करता है, जो व्यापक नीतियों, जोखिम संबंधी विवरणों और सुपरिभाषित भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के माध्यम से जोखिमों को प्रबंधित करने, मापने और नियंत्रित करने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण उपलब्ध करवाता है। इसके अतिरिक्त, यह बैंक के सभी पहलुओं में पर्याप्त पूंजी के रखरखाव और सक्रिय जोखिम प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए, आंतरिक पूंजी पर्याप्तता के मूल्यांकन की प्रक्रिया (आईसीएएपी) और एंटरप्राइज-व्यापी जोखिम प्रबंधन फ्रेमवर्क को तैयार करता है। विभिन्न दबावग्रस्त परिस्थितियों में बैंक की पूंजी आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए दबाव परीक्षण और पूंजी नियोजन की एक्सर्साइज़ की जाती हैं। नियामकीय दिशानिर्देशों के अनुसार दबाव परीक्षण नीतियां तैयार की जाती है और रिवर्स दबाव परीक्षण पद्धतियों को लागू किया जाता है। यह डेस्क जोखिम प्रबंधन से संबंधित विनियामकीय रिटर्न को समेकित करके प्रस्तुत करता है। यह डेस्क एफआईआरबी/एआईआरबी और बेसल III सहित विभिन्न स्तंभों के तहत क्रेडिट जोखिम पूंजी शुल्क की गणना करने में सहायता करता है।

क्रेडिट जोखिम प्रबंधन डेस्क विभिन्न उधार क्षेत्रों के लिए क्रेडिट रेटिंग जोखिम मॉडल को विकसित और अनुकूलित करके क्रेडिट जोखिम का प्रबंधन करता है। इस प्रकार सावधानीपूर्वक मान्य किए गए और समय-समय पर अद्यतन किए गए मॉडल, जोखिम के सटीक मूल्यांकन और सूचनापरक निर्णय लिए जाना सुनिश्चित

करते हैं। यह डेस्क व्यावसायिक इकाइयों को जोखिम-आधारित मूल्य निर्धारण के साथ क्रेडिट जोखिम प्रीमियम को ध्यान में रखते हुए, अप्रत्याशित नुकसान की एवज में प्रतिभूति स्वरूप आवश्यक पूंजी की लागत से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाता है। इसके अलावा, यह उद्योग ऋणों के लिए दिशानिर्देश तैयार करता है, जोखिमों को मापने और निगरानी करने के लिए विभिन्न पोर्टफोलियो का जोखिम विश्लेषण करता है, क्रेडिट एक्सपोजर, संकेंद्रण और रेटिंग का विश्लेषण करता है, तय सीमाओं और दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

क्रेडिट जोखिम प्रबंधन के अंग स्वरूप क्रेडिट रेटिंग डेस्क बैंक के भीतर विभिन्न स्तरों पर स्वीकृत ऋण प्रस्तावों के लिए क्रेडिट रेटिंग की जांच करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तकनीकी मुद्दों और मॉडल उन्नयन के लिए विक्रेताओं के साथ समन्वय करना, जोखिम रेटिंग मॉडल पर दिशानिर्देश और परिपत्र जारी करना एवं पूरे संगठन में जोखिम प्रबंधकों को स्पष्टीकरण और प्रशिक्षण प्रदान करना आदि इसके प्रमुख दायित्व हैं। यह डेस्क जोखिम रेटिंग मॉडल को बनाए रखने के लिए विक्रेताओं के साथ समझौतों के निष्पादन की निगरानी भी करता है और व्यक्तिगत एक्सपोजर के लिए पूंजी पर जोखिम-समायोजित रिटर्न (आरएआरओसी) की गणना की सुविधा प्रदान करता है।

बाजार जोखिम प्रबंधन डेस्क बाजार से संबंधित जोखिमों के खिलाफ सुरक्षा सुनिश्चित करता है, ब्याज दरों, विदेशी मुद्रा दरों, इक्विटी कीमतों और कमोडिटी कीमतों जैसे बाज़ार परिवर्ती कारकों में उतार-चढ़ाव से उत्पन्न होने वाले जोखिमों की निगरानी और प्रबंधन करता है। दैनिक बाज़ार जोखिम रिपोर्ट, जोखिम संकेतक निगरानी और स्थापित सीमाओं तथा नीतियों का अनुपालन इसके परिचालन का अभिन्न अंग हैं। यह डेस्क नीति निर्माण, निवेश रेटिंग पुनरीक्षण और वैश्विक विदेशी मुद्रा और निवेश पोर्टफोलियो के दबाव परीक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परिचालन जोखिमों के महत्व को पहचानते हुए, परिचालन जोखिम प्रबंधन डेस्क परिचालन जोखिम संबंधी नीतियां बनाता है और संबंधित पूंजी आवश्यकताओं की गणना करता है। यह एक बैंक-व्यापी हानि डेटाबेस संभालता है, परिचालन जोखिमों की पहचान और मूल्यांकन करता है, बैंक के उत्पादों, प्रक्रियाओं और अन्य कार्यों में जोखिम और नियंत्रण का स्व-मूल्यांकन (आरसीएसए) करता है। इसके अलावा, यह डेस्क सक्रिय अनुपालन और जोखिम शमन को सुनिश्चित करते हुए नियामक टॉलरेंट मामलों की निगरानी और रिपोर्टिंग करता है।

आस्ति-देयता प्रबंधन (एएलएम) डेस्क बैंक की वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए तरलता और ब्याज दर जोखिमों के प्रबंधन के लिए समर्पित है। यह ALCO एजेंडा तैयार करता है, तरलता और ब्याज दर जोखिम प्रबंधन के लिए नीतियां विकसित करता है और विभिन्न जोखिम संकेतकों की गणना करता है जैसे कि निधियों की सीमांत लागत आधारित उधार दर (एमसीएलआर), तरलता कवरेज अनुपात (एलसीआर), नेट स्थिर फंडिंग अनुपात (एनएसएफआर) और बैंकिंग बुक में ब्याज दर जोखिम (आईआरआरबीबी) आदि। व्यवहार अध्ययन, तरलता दबाव परीक्षण और बैक-टेस्टिंग अभ्यास विभिन्न परिदृश्यों में बैंक का लचीलापन सुनिश्चित करते हैं।

घरेलू और विदेशी बैंकों में बैंक के एक्सपोज़र, देश के जोखिम एक्सपोज़र और एक्सपोज़र सीमा की निगरानी तथा रिपोर्टिंग एक्सपोजर मैनेजमेंट डेस्क के दायरे में आती है। यह अलग-अलग बैंकों की जोखिम धारणाओं की समीक्षा करता है, एक्सपोज़र सीमा का आवंटन और निगरानी करता है और शीर्ष एकल और समूह प्रतिपक्ष एक्सपोज़र पर रिपोर्ट करता है। इसके अतिरिक्त, यह डेस्क बैंक के इंट्रा-ग्रुप लेनदेन और असुरक्षित एक्सपोज़र की निगरानी करने, नियामक आवश्यकताओं और विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन प्रथाओं का पालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वैश्विक पहुंच के साथ बैंक के विदेशी परिचालन के लिए समर्पित जोखिम प्रबंधन निरीक्षण की आवश्यकता होती है, जो ओवरसीज जोखिम प्रबंधन डेस्क द्वारा प्रदान किया जाता है। यह डेस्क विदेशी केंद्रों की जोखिम प्रबंधन समिति की बैठकों और परिसंपत्ति देयता

समिति (एएलसीओ) के कार्यवृत्तों में उजागर किए गए जोखिमों को संकलित और रिपोर्ट करता है। यह तरलता कवरेज अनुपात की गणना करता है, तरलता विवरणियों की निगरानी करता है और बैंक के अंतर्राष्ट्रीय परिचालन के लिए जोखिम और तरलता-संबंधी नीतियों की समीक्षा की सुविधा प्रदान करता है।

डिजिटल युग में, वित्तीय संस्थानों के लिए सूचना सुरक्षा एक सर्वोपरि चिंता बन गई है। मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (सीआईएसओ) के नेतृत्व में सूचना सुरक्षा डेस्क, बैंक के भीतर सूचना सुरक्षा के संपूर्ण दायरे के लिए जिम्मेदार है। नीति-निर्माण और प्रवर्तन से लेकर मूल्यांकन, अनुपालन रिपोर्टिंग, जागरूकता अभियान और परियोजना प्रबंधन तक, यह डेस्क बैंक की डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा और साइबर खतरों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सीआईएसओ साइबर सुरक्षा जोखिम मूल्यांकन करने, साइबर जोखिमों को कम करने, सुरक्षा संचालन केंद्र (एसओसी) का प्रबंधन करने और विभिन्न साइबर सुरक्षा प्रशासन निकायों और नियामकों के साथ संपर्क करने जैसी गतिविधियों की देखरेख करता है।

इन मुख्य कार्यों के अलावा, आरएमडी उचित शमन उपायों का सुझाव देते हुए, क्रेडिट एक्सपोजर, जोखिम धारणाओं, संपार्श्विक जोखिमों और अन्य संभावित जोखिमों के प्रस्तावों की जांच करते हुए एक परामर्शदाता की भूमिका भी निभाता है। इसके अलावा, विभाग की जिम्मेदारियों में विभिन्न नीतियों का निर्माण और रखरखाव शामिल है, जिनमें क्रेडिट जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम, परिसंपत्ति देयता प्रबंधन, तरलता प्रबंधन, निवेश प्रबंधन और व्यवसाय निरंतरता योजना से संबंधित नीतियां शामिल हैं। ये नीतियां पूरे बैंक में प्रभावी जोखिम प्रबंधन प्रथाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में काम करती हैं।

आरएमडी बैंक के नेतृत्व को क्रेडिट जोखिम प्रबंधन समिति और बाजार, परिचालन और परिसंपत्ति देयता जोखिमों के लिए उसके समकक्षों जैसी समितियों के माध्यम से सूचित रखता है, वे सुनिश्चित करते हैं कि वरिष्ठ प्रबंधन और बोर्ड को जोखिम परिदृश्य के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण हो। यह उच्चतम स्तर पर सूचित निर्णय लेने की अनुमति देता है।

कठोर प्रक्रियाओं, अत्याधुनिक तकनीकों और अटूट समर्पण के माध्यम से, आरएमडी बैंक की वित्तीय स्थिरता के संरक्षक के रूप में खड़ा है, जो जोखिमों के लगातार बदलते परिदृश्य को सटीकता और लचीलेपन के साथ नेविगेट करता है। विभिन्न जोखिमों को शामिल करने वाला इसका बहुआयामी दृष्टिकोण संभावित खतरों का सामना करने और आत्मविश्वास के साथ अवसरों का लाभ उठाने की बैंक की क्षमता को मजबूत करता है।

तिरंगा

मन तिरंगा, तन तिरंगा, रक्त का कण कण तिरंगा
तीन रंगों में रंगे जीवन का इक इक क्षण तिरंगा
है केसरिया रंग जिनके प्राणों की आहूतियों से
भारती के लालों के बलिदानों का दर्पण तिरंगा

माटी इस पावन धरा की, गाती जिनकी शौर्यगाथा
गर्व से रंजित हिमालय, कर रहा जयघोष जिनका
प्राणों में लेके तिरंगा, मर मिटे जो पुण्य पथ पर
राष्ट्र का वन्दन था वन्दे मातरम उद्घोष जिनका
हे अमर बलिदानी तुमसे ही तिरंगा है सुशोभित
तुमही हो इस ध्वज के वाहक, तुमको ही अर्पण तिरंगा

धन्य है उस माँ का आँचल जिससे लिपटा बचपना वो
धन्य वो राखी बहन की जिससे थी शोभित भुजाएँ
धन्य वो कांधा पिता का जिसपे खेला राष्ट्र गौरव
धन्य वो सिन्दूर जिसमें संगिनी माथे सजाये
कितने बलिदानों की गाथा, कितने त्यागों की है आभा
राष्ट्र ही सर्वोपरि, इन भावों का है प्रण तिरंगा।

अनिल कुमार चौधरी
मुख्य प्रबन्धक
बाराबंकी शाखा
लखनऊ अंचल

प्रवासी भारतीयों के आँगन में हिन्दी

नटेश्वर कमलेश
लिपिक
शाखा - दमुआ
जबलपुर अंचल

भारतीय जहां-जहां भी गए अपनी सभ्यता व अपनी संस्कृति को अपने साथ ले गए। किसी भी देश के निवासियों की आत्मा होती है उनकी भाषा व संस्कृति। भाषा व संस्कृति एक दूसरे से धागे व मोती की तरह ही जुड़ी होती है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और ये दूर दराज के देशों में बसने वाले भारतीयों के परिचायक हैं। ये भारतीय भले ही देश से दूर हो गए हों लेकिन अपनी भाषा व संस्कृति को इन्होने अपने ह्रदय से लगाए रखा है। जो लोग भारत से अन्य देशों में व्यवसाय या नौकरी के कारण जा कर बसे हैं उन्हें प्रवासी भारतीय कहते हैं। दुनिया के करीब 48 देशों मे रह रहे प्रवासियों की जनसंख्या लगभग 2 करोड़ है। लगभग 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहाँ की औसत जनसंख्या के रूप में वहाँ का प्रतिनिधित्व करते हैं व वहाँ की आर्थिक परिस्थितियाँ तय करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहां-जहां भारतीय बसे उन्होंने उस देश के आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की व बहुत कम समय में अपना स्थान बना लिया। मजदूरी से लेकर चिकित्सा, विज्ञान, प्रबंधन आदि कार्यकलापों में उन्होने अपनी छाप छोड़ी है।

प्रवासी भारतीयों को मुख्य तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है जिनमें पहले अनिवासी भारतीय होते हैं जो विदेशों में निवास करते हैं और 182 दिनों या उससे अधिक समय से भारत में नही रह रहे हैं। दूसरे भारतीय मूल के व्यक्ति होते हैं जो उन विदेशी नागरिकों को संदर्भित करता है जिनके दादा-दादी/परदादा-परदादी भारत में निवास करते थे व जिनके पास भारत का पासपोर्ट है। तीसरे प्रवासी भारतीय नागरिक वे होते हैं जो 26 जनवरी 1950 को भारत का नागरिक होने के लिए पात्र थे। पिछले 10 वर्षो में भारतीय प्रवासियों की संख्या में लगभग 23% की वृद्धि हुई है। खाड़ी देशों मे लगभग 8.5 करोड़ भारतीय रहते हैं, जो विश्व में सबसे अधिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 4 करोड़ भारतीय हैं जो दूसरा सबसे अधिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका के चुनाव में भारतीय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा कनाडा, मलेशिया, सिंगापूर आदि देशों में भारतीयों कि एक बड़ी आबादी बसती है। विश्व प्रवासन रिपोर्ट 2022 के अनुसार, वर्ष 2020 में दुनिया की सबसे बड़ी प्रवासी आबादी भारत में है। जो इसे विश्व स्तर पर शीर्ष मूल देश बनाती है। भारतीय डायस्पोरा का विशाल भौगोलिक विस्तार हुआ है।

भाषा हमारी संस्कृति की वाहक होती है। यह धरोहर व अस्मिता की पहचान करवाती है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। आज पूरा विश्व भारत के इतिहास से अच्छी तरह वाकिफ है। प्रारम्भ से ही देश के जो लोग भारत से गए उन्होंने अपनी भाषा व संस्कृति को पूरे विश्व में फैलाया। अगर वे विदेश में जा कर हिन्दी को त्याग कर वहाँ की भाषा को अपना लेते तो ये संभव ही नही था कि वे भारतीय परंपराओं व संस्कृति को इतना सम्मान पूरी दुनिया में मिल पाता। एक बात कही गई है "जैसा देश वैसा भेष"। लेकिन इस कहावत से दूर कहीं ये भारतीय अपना पहनावा, अपनी संस्कृति व अपनी भाषा को ही अपने साथ ले गए।

अपनी राष्ट्रभाषा को त्याग कर, अपनी संस्कृति को कभी आगे नही ले जाया जा सकता। ऐसा भी कहा गया है जिस राष्ट्र की भाषा व संस्कृति खत्म हो गई समझो वो राष्ट्र भी खत्म हो गया।

"विदेशों में भी एक भारत बसता है और ये भारत इन प्रवासियों के साथ इनके आँगन में भारतीय संस्कृति के साथ बसता है।"

प्रवासी भारतीयों का आँगन

अपने देश से दूर एक अलग ही दुनिया में ये भारतीय रहते हैं। जहां सुबह की शुरुआत मंदिर की घंटियो से या कहीं सब्जी वाले की आवाज़ से, तो कहीं खेत की रहट की ध्वनि से होती थी, वहीं दूसरे देशों मे कहीं शांति, तो कहीं एक अलग स्वर सुनाई देता है। सुबह सूर्य को अर्ध्य देना व तुलसी को जल चढ़ाना देखा जाता था, तो हर देश में कुछ अलग ही ढंग से सुबह की शुरुआत होती है।

लेकिन जिन भारतीयों को अपना आँगन छोड़ दूसरे ही देश में

बसना पड़ा, वे अपनी भाषा को भूले नही। आज भी हिन्दी सुबह-सुबह उनके आँगन में कहीं आरती-कहीं भजन के रूप में सुनाई दे जाती है। भले ही आस पास ही सही लेकिन भारतीय आध्यात्म ने इस रूप में पूरी दुनिया को आकर्षित किया है। भारतीयों के घरों मे भी हिन्दी सामान्यत: बोल-चाल की भाषा में बोली जाती है। हिन्दी भाषा की मधुरता व सहजता को जान कर ही आज दुनिया के लगभग 181 देशों मे हिन्दी पढ़ाई जाती है। कई विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी को एक प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार किया है।

स्वरूप

विदेशों में प्रवासी भारतीय ही हिन्दी भाषा के सबसे बड़े वाहक हैं व अपनी संस्कृति एवं परंपराओं के माध्यम से हिन्दी को जीवंत रखे हुए हैं। ये सिर्फ न अपनी बोलचल की भाषा में हिन्दी का उपयोग करते हैं अपितु इसका प्रचार भी इसी माध्यम से करते हैं। आज पूरा विश्व एक आँगन की तरह हो गया है जिसका कारण है आवागमन व संचार के साधन बहुत अधिक हो गए हैं। जैसे-जैसे वैश्विकरण बढ़ेगा, भाषाएँ विलुप्त होती चली जाएंगी और कुछ प्रमुख भाषाएँ ही नियमित संपर्क का साधन बनी रहेंगी, जिनमें से एक भाषा हिन्दी भी होगी, क्योंकि विश्व में इसने एक महत्वपूर्ण स्तर प्राप्त कर लिया है। इसका स्वरूप जिस प्रकार भारत में है उसी प्रकार यह अन्य देशों में भी फलफूल रही है। जो प्रवासी भारतीय विदेशों में साहित्य में रुचि रखते हैं वे अच्छी तरह जानते है कि साहित्य में हिन्दी की बुनियाद बहुत मजबूत है, इसका एक अलग स्वरूप है जिसे बदला नही जा सकता। हिन्दी साहित्य को प्रवासियों ने उसी रूप में अपनाया व आगे ले गए। आज विदेशों मे कई संगोष्ठी व कार्यक्रम आयोजित होते हैं जिससे हिन्दी भाषा के साथ हिन्दी साहित्य भी वैश्विक पटल पर अपना परचम लहरा रहा है।

हिन्दी भाषा में एक विनम्रता व सदभाव का भाव है। इसकी उदारता प्रवासियों ने पूरी दुनिया को दिखायी है। हिन्दी में अनेक ऐसे आदरसूचक शब्द हैं जिनमें छुपी विनम्रता लोगों के हृदय को छू जाती जाती है। जिसका उदाहरण है। स्वामी विवेकानंद के शिकागो के भाषण की शुरुआत मेरे भाइयों और बहनों कहकर करना। ये विनम्रता भारतीय संस्कृति की पहचान है। आज पूरे विश्व में हिन्दी भाषा की इस विनम्रता को सराहा जा रहा है।

महत्व

हम हिंदुस्तानी हैं व हिंदुस्तानी शब्द में ही हिन्दी शब्द सुनाई देता है। हिन्दी हमारे देश का प्रतिनिधित्व करती है हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। आज या आज से पहले जो लोग देश से बाहर गए, उन्होंने हमारे देश की संस्कृति व भाषा को सबके सामने रखा एवं सभी इससे प्रभावित हुए व इसे अपनाया। प्रवासी भारतीय इसका बहुत बड़ा माध्यम हैं जिस प्रकार चावल के एक दाने से पूरे बर्तन के चावल पके या नही इसका अनुमान लगाया जा सकता है, उसी प्रकार ये प्रवासी भारतीय पूरे विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अन्य देशों में भारत की छवि का निर्माण भी प्रवासी भारतीय ही करते हैं। सबसे पहले ये अपने व्यवहार से अपने लिए सम्मान अर्जित करते हैं। अपने चरित्र को विश्व के सामने ले कर आते हैं। इसका व्यवहार वहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अगर ये अपनी छवि का निर्माण अच्छी तरह कर पाये तो पूरे देश की छवि उसी तरह विश्व में विख्यात होगी।

जब तक एक व्यक्ति का अच्छा चरित्र उसकी अच्छी छवि लोगों के सामने नही आती। उसके देश के लिए भी सम्मान उनके हृदय मे पैदा नही होता।

सबसे अच्छी बात ये है की इन प्रवासी भारतीयो ने अपने काम को बखूबी निभाया है। इन्होंने अपने देश को अपनी भाषा को इतने सरल तरीके से लोगों के सामने रखा है कि आज सम्पूर्ण विश्व में भारत के सम्मान का स्तर ही कुछ अलग हैं।

ऐसे कई अन्य माध्यम हैं जिनसे ये प्रवासी भारतीय हिन्दी को विश्व प्रसिद्धि दिलाते हैं।

खेल

आज भले ही कोई भी खेल हो अगर भारत में उसका प्रचलन हो व अगर भारतीय टीम वहाँ खेल रही हो तो वहाँ विदेश नही भारत नज़र आता है। कई मैच में देखा गया है कि भारतीय हिन्दी भाषा के कई पोस्टर लिए व अलग अलग संदेश लिए खड़े नज़र आते हैं। खेल से हिन्दी भाषा का जुड़ाव भी कुछ इस तरह हो गया है कि खेल के मैदानों में हिन्दी में नारे गूँजते सुनाई देते हैं।

पौराणिक कथाएँ

भारतवासी जहां भी गए वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को उन लोगो ने प्रभावित किया, वहाँ के स्थानों के भी नाम बदलकर उनका भारतीयकरण कर दिया। माना जाता है कि इन्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप का नाम सुमित्रा के नाम पर रखा गया है जो रामायण से

प्रभावित है।

मिस्त्र में एक मंदिर है जिसे रमेसियस कहते हैं जो की भगवान श्रीराम से प्रेरित हो कर रखा गया है। थाईलैंड, कंबोडिया, बर्मा, लाओस, मलेशिया में तो राम कथा विभिन्न रूपों में प्रदर्शित होती है।

इन्डोनेशिया जो एक मुस्लिम देश है, में रामायण की रचना भी की गई है और भगवान श्रीराम से संबन्धित ढेर सारा साहित्य यहाँ उपलब्ध है। बाली के निवासी तो अनन्य रामभक्त हैं।

इसके अलावा भगवान श्री कृष्ण के ढेरों अनुयायी पूरे विश्व में मिलेंगे जो उनकी आराधना व भक्ति मे हरे रामा हरे कृष्णा का जाप करते हुए पूरे विश्व में मिल जाएंगे।

ये प्रभाव कैसे पड़ा जो भारतीय पौराणिक कथाएँ इतनी लोग प्रिय हो गई? इसका उत्तर है इसकी भाषा व इसका स्वरूप। ये इस रूप में रची गई है व प्रचलित हैं उसी रूप में पूरे विश्व के पास गई हैं व जिनका माध्यम हैं प्रवासी भारतीय जो अभी ही नही बल्कि विगत सैंकड़ों वर्षों से भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

त्योहार

भारतीय त्योहारों की बात ही अलग है। रोशनी, रंग, व्यंजन आदि से सजे हुए ये त्यौहार भारत ही नही बल्कि पूरे विश्व को महका रहें हैं। इसी वर्ष दीपावली में न्यूयॉर्क में भारतीय कर्मचारियों को एक दिन का अवकाश प्रदान किया गया था।

कई देशों में दीपावली, होली व कई भारतीय त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाए जाते हैं। इन्हें मनाने वाले प्रवासी भारतीय हैं जो अपने देश के महत्वपूर्ण पर्वों को दुनिया के सामने रखे हुए हैं। इनके भारतीय त्योहारों को विदेशों मे मनाने का महत्व यहाँ कितना अधिक है इस बात का अंदाज़ा इसी से लग जाता है कि त्योहार संस्कृति का सार होते हैं व विदेशों मे रह कर भी भारतीय जीवनशैली की छाप को ये भारतीय दुनिया भर में छोड़ रहे हैं।

अध्यात्म

भारत प्रारम्भ से ही साधू-संतों का देश रहा है। ये संत आदि काल से ही भारतीय जनता को अध्यात्म से जोड़ते आ रहे हैं। देश में हर नागरिक किसी न किसी संत का अनुसरण अवश्य करता है। भारत के ये संत पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं ये जीवन शैली से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर मनुष्यों का मार्गदर्शन करते आयें हैं। ये मार्गदर्शन जीवन को आसान बनाने के साथ-साथ कठिनाइयों से लड़ना भी सिखाते हैं। जब विदेशियों ने भारतीयों के इस आध्यात्म को देखा व जाना तो वे उससे जुड़े बिना नही रह पाये। ये प्रवासी भारतीयो की भाषा व जीवन शैली ही थी जिसने पूरे विश्व को भारत के अध्यात्म से जोड़ा।

योग

भारत से निकला सिर्फ एक शब्द "ॐ" जो धार्मिकता के साथ योग से जुड़ा है भारतीय भाषा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीयों ने इसी ॐ को योगा के माध्यम से पूरे विश्व में फैलाया। आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है जो भारत की ही देन है।

स्वतंत्रता आंदोलन में

प्रवासी भारतीय दिवस मनाया ही इसीलिए जाता है क्योंकि इसी दिन 15 जनवरी को महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के खिलाफ भेदभाव को खत्म कर लौटे थे। उनके इस संघर्ष को उनके अहिंसा व सत्य जैसे मूल्यों सहित पूरे विश्व ने सराहा था।

संस्कृति विस्तारक के रूप में

प्रवासी भारतीय आज भारतीय संस्कृति का इतिहास व उसकी महत्ता सारी दुनिया में प्रसारित कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि आज भारतीय सभ्यता, भाषा पूरी दुनिया में विख्यात है।

नई ऊर्जा

प्रवासी भारतीय वे लोग हैं जो अपना देश, अपनी पहचान, अपने लोग अपनी धरती को छोड़ कर दूसरे देश में जाकर बसे हैं।

सरकारें चाहे जितनी भी योजना बना लें या कोई भी देश जितना भी प्रयत्न कर ले, वास्तविक स्तिथि से इन्ही प्रवासियों को गुजरना होता हैं। इनके साथ कई समस्याएँ आती हैं लेकिन ये अडिग रह कर उसका सामना करते हैं।

इन सभी समस्याओं के बाद भी प्रारम्भ से ही प्रवासी भारतीय इन सभी समस्याओं के साथ अपने देश का प्रतिनिधित्व करते आ रहे हैं। आज कई बड़ी हस्तियों द्वारा अपने अभिभाषण मे "नमस्ते" जैसे शब्दों का प्रयोग करना व कई महत्वपूर्ण समारोहों में हिन्दी का प्रयोग करना ये दर्शाता है कि हिन्दी अपने उच्च स्तर को प्राप्त कर रही है। कई भारतीय प्रवासी अपने साहित्य को विदेशों में रह कर आगे बढ़ा रहें हैं। वे न केवल विदेशों में भारतीय सभ्यता को बल्कि विदेश में हो रहे कुछ अच्छे परिवर्तनों को भी भारत में लेकर आ रहे हैं।

भारतीय प्रवासियों का आँगन दूर दराज पल रही भारतीय संस्कृति की एक पहचान है।

विश्व हिन्दी दिवस की उपयोगिता

संजय कुमार सेन
प्रबंधक (राजभाषा)
हावड़ा अंचल

हिंदी, भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसकी विशेषता और उपयोगिता को मानते हुए, विश्व हिंदी दिवस का आयोजन प्रतिवर्ष होता है। यह दिवस हिंदी भाषा को गौरवान्वित करने, उसके महत्व को अधिष्ठापित करने, और लोगों को इसके महत्व के प्रति जागरूक करने का उद्देश्य रखता है।

"विश्व हिन्दी दिवस" की शुरुआत 10 जनवरी, 2006 को की गई थी। यह दिवस भारतीय संघ के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के पहले आदेश पर मनाया जाता है। इस दिन का चयन इसलिए किया गया क्योंकि 10 जनवरी को विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भारत में किया गया था। विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 10 जनवरी, 1975 को मॉरिशस में हुआ था। इस सम्मेलन में 27 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, जिनमें हिंदी भाषा के विकास और प्रसार के विषय में चर्चा की गई थी। इसके बाद, 2006 में महामहीम डॉ. अब्दुल कलाम ने विश्व हिंदी सम्मेलन के महत्व को ध्यान में रखते हुए "विश्व हिन्दी दिवस" की शुरुआत की। इस दिन के माध्यम से, विश्व भर में हिंदी के महत्व को बढ़ावा दिया जाता है और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है।

हिंदी भाषा भारत की राजभाषा है, और यह दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा में से एक है। इसका अर्थ यह है कि अनेक लोग इसे अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में चुनते हैं और इसका उपयोग रोजमर्रा की जीवन में करते हैं। हिंदी को एक ऐसी भाषा माना जाता है जो समृद्धि, साहित्य और संस्कृति को एक संगीतमय आधार पर जोड़ती है। हिंदी भाषा बहुत समृद्ध और विविधतापूर्ण भाषा है जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति और विचारधारा को दर्शाती है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कारण बताए हैं जो हिंदी को उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण बनाते हैं:

- **संवाद का माध्यम:** हिंदी भाषा का उपयोग देशवासियों के बीच संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह व्यक्ति के विचारों और भावनाओं को सहजता से समझने में मदद करती है और सामाजिक संवाद को संवारती है।

- **राष्ट्रीय एकता का प्रतीक:** हिंदी भाषा भारत की एकता और अखंडता का प्रतीक है। यह भाषा देशवासियों को एक साथ जोड़ती है और उन्हें एक सामान्य भाषा के माध्यम से संवाद करने की क्षमता प्रदान करती है।

- **साहित्यिक धरोहर:** हिंदी भाषा में संग्रहित अमूल्य साहित्यिक धरोहर भारतीय साहित्य की अनमोल धारा है। कविताएं, कहानियाँ, नाटक और गाने हिंदी भाषा की साहित्यिक समृद्धता को दर्शाते हैं।

- **व्यापार और विज्ञान में:** हिंदी भाषा का उपयोग व्यापार, विज्ञान, और तकनीक में भी होता है। यह भाषा लोगों को व्यापारिक संवाद के लिए भी सहायक होती है और विज्ञान और तकनीकी जानकारी को समझने में मदद करती है।

- **संवैधानिक महत्व:** हिंदी भाषा को भारतीय संविधान द्वारा भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। इससे हिंदी को आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक संप्रेषण में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इस प्रकार, हिंदी भाषा का महत्व व्यापक है और यह भारतीय समाज और संस्कृति के अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसकी उपयोगिता और महत्वता को समझकर, हम इसे संरक्षित रख सकते हैं और उसका सम्मान कर सकते हैं। हिंदी का विस्तार न केवल भारत में है, बल्कि यह विदेशों में भी एक प्रमुख भाषा बन चुकी है। भारतीय दिवसों, समारोहों और सम्मेलनों में इसका प्रयोग होता है, जिससे

दुनिया भर के लोग इसकी साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव कर सकते हैं। अगर हम इतिहास में झाँकें तो पाएंगे कि महात्मा गांधी के 10 जनवरी 1942 के एक संवाद में उन्होंने हिंदी के महत्व को बढ़ावा देने की बात कही थी। उन्होंने हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए पहल की थी। इसके बाद, 1975 में श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने भारत सरकार के द्वारा हिंदी को अधिक प्रोत्साहन देने के लिए "राजभाषा पुरस्कार" की शुरुआत की थी।

"विश्व हिन्दी दिवस" मनाने से हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहन प्राप्त होता है। यह दिवस हिंदी भाषा के महत्व को और अधिक समझने का अवसर प्रदान करता है। इस दिन के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम, सम्मेलन, सेमिनार आदि आयोजित किए जाते हैं जिनमें हिंदी की महत्ता और उपयोगिता पर चर्चा की जाती है। इसके अलावा, विभिन्न स्थानों पर हिंदी सप्ताह भी मनाया जाता है जिसमें हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह दिवस हिंदी भाषा को गौरवान्वित करने और उसके प्रसार-प्रसार को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है। इसकी उपयोगिता के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- **भाषा को प्रोत्साहन:** "विश्व हिन्दी दिवस" एक महत्वपूर्ण प्लेटफ़ॉर्म है जो हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने और उसका प्रोत्साहन करने में मदद करता है। यह दिवस लोगों को हिंदी के महत्व को समझने और इसे अपनाने के प्रेरित करता है।

- **सांस्कृतिक विनिमय:** इस दिवस के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार किया जा सकता है। विभिन्न देशों के लोग इस दिवस को मनाकर हिंदी भाषा और संस्कृति को समझते हैं और अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर को साझा करते हैं।

- **विश्वास स्थापित करना:** विश्व हिन्दी दिवस के माध्यम से भारत की प्रमुख भाषा हिंदी का विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान स्थापित किया जा सकता है। यह दिवस विभिन्न देशों के लोगों को हिंदी के महत्व को समझने और उसे अपनाने में मदद करता है।

- **भाषा का विकास:** इस दिवस के अवसर पर हिंदी भाषा के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम और परियोजनाएं आयोजित की जा सकती हैं। यह भाषा के व्याकरण, शब्दावली, और उच्चारण को सुधारने का माध्यम भी हो सकता है।

- **हिंदी सिखाने को प्रोत्साहन:** इस दिन के अवसर पर हिंदी भाषा को सिखाने की प्रेरणा दी जा सकती है, विशेष रूप से विदेशों में। यह विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के अध्ययन और प्रशिक्षण को प्रोत्साहित कर सकता है।

विश्व हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हिंदी भाषा का महत्व अद्वितीय है। इसे बढ़ावा देना और इसे समृद्ध बनाना हम सभी का कर्तव्य है। इस विशेष दिन पर, हम सभी को हिंदी के महत्व को समझते हुए, इसे गर्व से स्वीकारना चाहिए और उसके प्रचार-प्रसार में योगदान देना चाहिए। इसके माध्यम से हम अपनी संस्कृति, भाषा, और साहित्य को विश्व के अन्य हिस्सों तक पहुँचा सकते हैं। "विश्व हिन्दी दिवस" के मनाने से निम्नलिखित प्रभाव हो सकते हैं:

- **हिंदी के प्रति जागरूकता:** यह दिवस हिंदी भाषा के महत्व को लोगों के बीच फैलाने में मदद करता है और उन्हें इसके महत्व के प्रति जागरूक करता है।

- **हिंदी के प्रति आकर्षण:** इस दिन के अवसर पर हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो लोगों को हिंदी के प्रति और भी आकर्षित करते हैं।

- **अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन:** विभिन्न देशों में "विश्व हिन्दी दिवस" के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो हिंदी को विश्व स्तर पर प्रोमोट करते हैं।

- **साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रसार:** "विश्व हिन्दी दिवस" के मनाने से हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक विरासत को समझने और बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

- **हिन्दी की शिक्षा बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन:** इस दिन के अवसर पर हिंदी के प्रोत्साहन के लिए विभिन्न स्कूल, कॉलेज और संस्थानों में प्रतियोगिताएं और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इन सभी प्रभावों के माध्यम से "विश्व हिन्दी दिवस" के मनाने से हिंदी भाषा को समर्थ बनाने और उसके प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भाषा, साहित्य और समाज

सचिन यादव
प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

महात्मा गांधी ने कहा था कि भाषा हमारे मन का दरवाजा होती है और विचारों का माध्यम होती है। अनेक विद्वानों ने भाषा को परिभाषित करते हुए इसे सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक संबंधों को व्यक्त करने का एक माध्यम बतलाया है। यह शब्दों, अक्षरों और ध्वनियों का उपयोग करके व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और ज्ञान को संचारित करने का तरीका है। भाषा मानव समाज का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है, जो संचार, समझ और संबंधों को स्थापित करता है। भाषा हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करती है और हमारे बीच संपर्क की क्षमता का निर्माण करती है। इसके अलावा भाषा, कला, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के रूप में स्वयं एक महत्वपूर्ण विधा होती है। संचार से इतर भाषा का उपयोग सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि के लिए भी होता है। नेल्सन मंडेला का कथन है कि

"यदि आप किसी आदमी से उस भाषा में बात करते हैं जिसे वह समझ सकता हो, तो आपकी बात उसके दिमाग तक पहुँचती है लेकिन यदि आप उस व्यक्ति को अपनी बात उसकी मातृभाषा में कहते हैं तो यह उसके दिल तक पहुँच जाती है।"

भाषा की व्यापकता और उपयोगिता शिक्षा, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में ज्ञान और विवेक के विनिर्माण की क्षमता के आधार पर तय होती है। भाषा का अध्ययन और विकास मानव समाज के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भाषा के शोध और विकास से हमें विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक समृद्धि की जानकारी मिलती है। इसके अलावा, भाषा का अध्ययन भाषा विज्ञान, भाषा साहित्य और भाषा शिक्षा के क्षेत्र में नए अध्ययनों और अनुसंधानों को प्रेरित करता है। समाज में भाषा का अध्ययन और विकास एक सुदृढ़ सामाजिक संरचना और सहयोगी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा की सही समझ, उपयोग और विकास से हम समृद्ध, सहयोगी और समावेशी समाज का निर्माण कर सकते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू का कथन है कि

"भाषा हमारे समाज का आईना है, जो हमारी संस्कृति और विचारों को प्रकट करता है।"

भाषा विज्ञान के अनुसार पूर्णत: विकसित भाषाओं की अपनी एक लिपि होती है, जैसे हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी, अंग्रेजी की लैटिन, चीनी का हान्जी और जापानी का कान्जी आदि है। संरचना की दृष्टि से लिखित भाषा में अनेक वर्णों का उपयोग होता है, जो उनकी ध्वनि को प्रतिष्ठित करते हैं। इसके बावजूद, अन्य भाषाओं में वर्णों की संख्या और उपयोग की विशेषताएँ अलग-अलग होती हैं। सभी भाषाओं में उपयोग की दृष्टि से उनके व्याकरण के अनेक नियम और अवधारणाएँ होती हैं जो उसे अन्य भाषाओं से अलग बनाते हैं। इसमें क्रियाओं, संज्ञाओं, सर्वनामों और कारकों की विशेषताएँ शामिल होती हैं। सभी भाषाओं की शब्दावली अन्य भाषाओं की तुलना में अलग होती है, जिसमें उसके विशेष शब्द, मुहावरे और लोकोक्तियाँ शामिल होते हैं। हालांकि भाषाएं आपस में शब्दों का आदान-प्रदान करती रहती हैं।

संचार के पश्चात् भाषा का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसकी साहित्यिक धरोहर है, उदाहरण के लिए हिंदी साहित्य विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक परंपराओं में से एक है। हिंदी साहित्य का इतिहास विशाल है, जिसमें वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, रामायण, महाभारत, पुराण, और भगवद गीता जैसी महत्वपूर्ण प्राचीन पाठ्यक्रम शामिल हैं। साहित्य की दृष्टि से भाषाओं के उत्थान को कालखण्डों में विभाजित किया जाता है जैसे हिंदी भाषा का साहित्य आदि युग, मध्यकालीन युग और आधुनिक युग में विभाजित किया गया है। हिंदी का आदि युग समृद्धता और उत्कृष्टता का काल है, जिसमें आदिकावि सूरदास, तुलसीदास, और कबीरदास जैसे महान कवियों ने अपनी अमूल्य रचनाओं के माध्यम से भारतीय साहित्य को अमर बनाया। इसके बाद भाषा का उत्थान हुआ, जिसने साहित्य को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में मदद की। मध्यकालीन युग में हिंदी साहित्य के उत्कृष्ट काव्यकार, उपन्यासकार और नाटककारों ने उनकी श्रेष्ठ कृतियों के माध्यम से समाज में गहरी छाप छोड़ी। आधुनिक युग में हिंदी साहित्य ने महत्वपूर्ण अवधारणाओं और उत्कृष्ट लेखकों की श्रृंखला को सृजित किया। इस युग के प्रमुख लेखकों में मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, रामधारी

सिंह 'दिनकर', और सुधीर कुमार दीक्षित जैसे नाम शामिल हैं। इनके काव्य, कहानियाँ, उपन्यास, और नाटकों में समाज की अनेक समस्याओं और चुनौतियों का सामाजिक और राजनैतिक विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार सभी भाषाओं में साहित्य का योगदान उत्कृष्ट और विस्तृत होता है, जो विभिन्न आयामों में विभाजित किया जा सकता है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गद्य, और निबंध आदि के माध्यम से साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, और मानवतावादी विचारों को प्रस्तुत किया जाता है। फ्रेंक स्मिथ का कथन है कि

"भाषा कोई आनुवांशिक उपहार नहीं है, यह एक सामाजिक उपहार है। कोई नई भाषा सीखने का मतलब है एक नए समुदाय का सदस्य बनना।"

संचार और साहित्य के बाद भाषा का तीसरा महत्वपूर्ण पहलू उसका समाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव होता है। भाषा के माध्यम से लोग अपनी भावनाओं, धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को व्यक्त करते हैं और इससे समाज में एकीकरण और सामंजस्य बढ़ता है। भाषा हमारे सोचने, व्यवहार करने और अभिव्यक्ति के ढंग को प्रभावित करती है। भाषा न केवल हमारे व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि यह समाज के साथ हमारे संबंधों को भी प्रभावित करती है। भाषा समाज को संगठित रखने में अहम भूमिका निभाती है और संचार को संभव बनाती है, जिससे लोग एक दूसरे के साथ संपर्क में रह सकते हैं। भाषा सांस्कृतिक विरासत का भी एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि यह हमें हमारी विरासत, शिक्षा और धार्मिक धारणाओं के संदेशों को सजीव बनाती है। भाषा के माध्यम से सामाजिक संगठनों को स्थापित करने में मदद मिलती है। विभिन्न भाषाएँ विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को पहचान देती हैं और उनकी विशेषताओं को प्रकट करती हैं। भाषा के सामाजिक प्रभावों में सामाजिक विभाजन, समाजिक समायोजन और समाज में बदलाव के कई पहलू होते हैं। यहां भाषा का उपयोग समाज में शक्ति का स्रोत बनता है और इसका गलत उपयोग भाषा के माध्यम से द्वेष, असमानता, और विषमता को बढ़ा सकता है। भाषा का सांस्कृतिक प्रभाव भी समाज के लिए महत्वपूर्ण है। भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो समाज की विरासत, ऐतिहासिक परंपराएँ और सांस्कृतिक अंदाज को साझा करती है। भाषा सांस्कृतिक विविधता को भी दर्शाती है और लोगों को उनके आदिवासीय और स्थानीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व महसूस करवाती है। भाषा के माध्यम से कला, साहित्य और दर्शन को साझा करना और संरक्षित रखना संभव हो पाया है। भाषा के माध्यम से विचारों को संगीत, कविता, कहानी आदि विधाओं में रूपांतरित करके उन्हें सजीव बनाकर कालजयी बनाया जा सकता है, जो सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखने में मदद करता है। प्रसिद्ध उपन्यासकर टेड चियांग के प्रसिद्ध उपन्यास 'स्टोरी ऑफ यूअर लाइफ' के एक सीन में, एलियन्स के साथ भाषाई संपर्क स्थापित करने का प्रयास करते हुए दो पृथ्वीवासी आपस में बातचीत करते हैं कि

लुइ बंक्स: मान लो हम उन्हें भाषा के रूप में हिन्दी के स्थान पर शतरंज सिखाते हैं तो प्रत्येक वार्ता एक खेल की तरह होगी। हर एक विचार की अभिव्यक्ति हार, जीत और विरोध के माध्यम से की जाएगी।

क्या आपको समस्या समझ में आई?

यदि शुरुआत से ही आपको सिर्फ और सिर्फ हथोड़ा चलाना ही सिखाया गया हो ...

कर्नल वेबर: तो सब कुछ कील ही नज़र आएगा।

ऊपर आकाश

अब तबीयत भरने लगी है
प्रश्न और जवाब से परे
एक शून्य सा पसर गया है।

मन के आकाश में
अब इच्छाओं के परिन्दें नहीं उड़ते
खोने का भय भी जाता रहा।

चूंकि मैं बहुत मजबूत हूँ,
इसलिए अपने गालों पर ढलक आए
आसुओं को पौंछकर
उस लकीर को ही मिटा डाला
जो कभी गवाही देती कि
मैं कभी रोया था।

खामोश हूँ, खुश दिखता हूँ
अपने ही अंदर जाने से डरता हूँ
ना जाने वहाँ कितने ही बैठे हैं
बिलकुल मेरे ही जैसे हमशक्ल
मुझसे मिलने के लिए, जाने कब से, मेरे इंतजार में ?

विनय कुमार
प्रबंधक
ऋण निगरानी विभाग
वाराणसी अंचल

राजभाषा हिन्दी का महत्व, प्रचार-प्रसार और प्रासंगिकता

विजय कुमार
प्रबंधक
राजभाषा
गोवा अंचल

भारत एक विविध भाषा, संस्कृति और समृद्धि से भरा देश है। यहां भिन्न-भिन्न भाषाएं, संस्कृति और अनेक धरोहर हैं जो इसे एक रंगीन और विभिन्न देश बनाते हैं। इस विविधता में भी, राजभाषा हिन्दी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हिंदी भारत की राजभाषा है और इसका प्रचार-प्रसार और प्रासंगिकता देश के विकास में एक अहम भूमिका निभाती है। हिंदी भारतीय संस्कृति और भाषाओं की समृद्धि का प्रतीक है। इसे भारत की अधिकांश जनता की मातृभाषा माना जाता है और यह देशवासियों के बीच एकता का माध्यम है। इसे भारत की राजभाषा चुनने के पीछे कई कारण हैं। पहला, यह राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने में सहायक है। देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं, लेकिन हिंदी एक साधारण माध्यम के रूप में सभी को एकजुट करती है। हिंदी राजभाषा के रूप में भारत की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे देशवासियों की भावनाओं को सम्मान मिलता है और राष्ट्रीय स्तर पर भाषा को समर्थन दिया जाता है।

हिंदी एक संस्कृतिक धरोहर भी है और भारतीय विरासत के अनमोल आभूषणों को संरक्षित रखती है। इस भाषा के माध्यम से हम प्राचीन समृद्धि, साहित्य, कला और विज्ञान की धरोहर को अगली पीढ़ियों तक पहुंचा सकते हैं। रामायण, महाभारत, भगवद गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथ हिंदी के माध्यम से हमें नैतिकता और अध्यात्मिकता का संदेश देते हैं। विभिन्न कविताएं, कहानियाँ और गीत भी हिंदी के साहित्यिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हिंदी भाषा का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भी है। भारतीय दूतावासों, संगठनों और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की भूमिका दैनंदिन उभरती जा रही है। विभिन्न देशों के लोग इसे अपना रहे हैं और इससे भारत की संस्कृति और परंपरा को बेहतर ढंग से समझते हैं। हिंदी के माध्यम से हम अनेक भाषाओं के साथ एकता का संदेश देते हैं और विभिन्न भाषाओं के बीच सामंजस्य बढ़ाते हैं।

राजभाषा के रूप में हिंदी को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने अनेक पहल की हैं। राजभाषा विभाग राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम करता है और समाचार पत्रिकाएं, रेडियो, टीवी और अन्य माध्यमों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देता है। विभिन्न शैक्षिक संस्थान और सरकारी विभाग भी हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम करते हैं। यहां हिंदी को समर्थन देने और इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए कार्यशालाएं, संगोष्ठियां और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। सरकारी विभाग और निजी संस्थानों ने हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम भी चलाएं हैं। इंटरनेट और डिजिटल युग में, हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नए तकनीकी उपाय भी उपलब्ध हैं। ऑनलाइन वेबसाइट, ऐप्स, सोशल मीडिया और वीडियो सामग्री को हिंदी में उपलब्ध कराने से हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिला है। इससे भारत के विभिन्न हिस्सों से लोग हिंदी में रुचि लेते हैं और अपनी भाषा को समर्थन देने के लिए सक्रिय रहते हैं।

विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर होते हुए भारत विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजभाषा हिंदी का महत्व इस समय और भी अधिक बढ़ गया है। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं और यहां विभिन्न समूहों, संगठनों और समाज के लोग अलग-अलग भाषाओं में बातचीत करते हैं। हिंदी के माध्यम से भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोना आसान हो जाता है। राजभाषा हिंदी का उपयोग सरकारी काम, न्यायिक प्रक्रिया और संघर्षों के समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। हिंदी को अधिक बढ़ावा देने से देश की संघर्ष क्षमता और स्थायित्व में सुधार संभव है। भारतीय समाज, संस्कृति, और राजनीति में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है और यह देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। हम सभी को इसे समर्थन और सम्मान के साथ बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम एक समृद्ध, समर्थ और एकत्रित भारत की ओर बढ़ सकें। हिंदी के प्रचार-प्रसार और समर्थन से हम भारतीय समाज की एकजुटता को बढ़ा सकते हैं और राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान कर सकते हैं। हम सभी को सक्रियता के साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार को समर्थन देना चाहिए ताकि हमारा देश और समाज एक प्रेरक, समर्थ और विकसित भारत रूपी संविधान वादी देश बन सके।

"तोहफा"

योगेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
दिल्ली एनसीआर
आंचलिक कार्यालय

अंधेरा होने को आया था, शर्मा जी (पूरा नाम किरण शर्मा) अपनी व्हील चेयर बैठे पुरानी यादों में खोए हुए थे। ज़िन्दगी से उनका मोह भंग हो चला था क्योंकि जिस बेटे को उन्होंने इतने प्यार से बड़ा किया था, अब उसके पास अपने पिता के लिए समय ही नहीं था। तभी उनके बेटे सूरज ने रात के सन्नाटे को चीरते हुए कहा पिताजी कल हमें कहीं चलना है, आप सुबह जल्दी तैयार हो जाना। शर्मा जी के पूछने पर सूरज ने कहा कि वो ये बात कल ही बताएगा कि उन्हें कहाँ चलना है। शर्मा जी थोड़े सहम गए, अब उन्हें रह-रहकर अपने बीते हुए कल की बातें याद आने लगी। "सौतेला तो सौतला ही होता है", "ना जात-पात का पता और ना ही खानदान का, पता नहीं किस धर्म के बच्चे को उठा लाए हो।" ये बातें लगातार शर्मा जी के कानों में गूंजने लगी।

आज से लगभग पच्चीस बरस पहले शर्मा जी और उनकी पत्नी आशा ने सूरज को एक अनाथ आश्रम से गोद लिया था। शादी के लगभग छह साल बाद भी जब शर्मा दंपत्ति को संतान की प्राप्ति नहीं हुई, तब जाकर उन्होने सूरज को गोद लिया। उनके परिवार के सभी लोग इस बात के खिलाफ थे कि एक ऊंचे ब्राह्मण परिवार में एक ऐसा बच्चा आए, जिसकी जात-पात-धर्म आदि का कोई आता-पता ही न हो। इन सब बातों के बावजूद भी शर्मा दम्पती ने सूरज को गोद लिया और उसका पालन-पोषण अच्छे से किया। आशा तो सूरज पर जान छिड़कती थी, सूरज उसकी जान था। आशा बहुत प्यार से सूरज की देखभाल करती और कहती थी

तेरे आने से मेरे जीवन में आई बहार,
भूल गई थी जो खुशियाँ मेरे घर का रस्ता,
अब आने लगी लगी हैं मेरे घर के द्वार।
तेरी खुश्बू से महक उठा है मेरा घर-आँगन,
अब तेरी हर सांस से जुड़ा है मेरा ये जीवन।

आशा उससे एक पल भी अलग ना रह पाती, परन्तु फिर भी सूरज की इच्छा के लिए ही आशा ने बीमार होने के बावजूद सूरज को विदेश भेजा, डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए। जब सूरज अपनी पढ़ाई खत्म कर घर लौटा तब तक आशा की तबियत ज़्यादा बिगड चुकी थी और थोड़े दिनो बाद ही वे चल बसी।

अचानक से सूरज की आवाज आई, पिताजी अब सो जाओ, हमें सुबह जल्दी निकलना है। बार-बार पूछने पर पर भी जब सूरज ने कुछ नहीं बताया, तब शर्मा जी के मन में बुरे-बुरे ख्याल आने लगे। शर्मा जी सोचने पर मजबूर हो गए कि कहीं वे अपने बेटे पर बोझ तो नहीं बन गए हैं, क्या उनका बेटा उन्हें वृद्धाश्रम छोडने के बारे में तो नहीं सोच रहा है। इसी उधेड़बुन में सारी रात चली गई। सुबह जल्दी उठ शर्मा जी तैयार हो गए और अपनी कुछ जरूरतों का सामान भी साथ रख लिया, सोचा कहीं रात वाली बात अगर सच हो गई तो इन सामान की जरूरत तो पड़ेगी ही। सूरज ने शर्मा जी की व्हील चेयर को गाड़ी में रखा और शर्मा जी को साथ लेकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ने लगा। कुछ देर बाद वे एक नई इमारत के पास पहुंचे और सूरज ने गाड़ी को रोक दिया। उस इमारत को देख शर्मा जी को रात की बात सच लगने लगी, तभी सूरज ने कहा आओ पापा और शर्मा जी को व्हील चेयर पर बैठाकर उस इमारत की ओर बढ़ चला। इमारत देखने में बिलकुल नई थी। जब वे इमारत के बिल्कुल बीचों-बीच पहुंचे तो शर्मा जी को बहुत हैरानी हुई क्योंकि उस इमारत के बीचोंबीच एक बड़ी-सी मूर्ति बनी हुई थी, जो कि उनकी स्वर्गवासी पत्नी आशा की थी। शर्मा जी ने अपने चश्मे को उतारकर अच्छे से साफ किया और देखा कि उस मूर्ति के पीछे एक बड़ा-सा बोर्ड लटकाया हुआ था, जिस पर लिखा था "आशा की

किरण" वृद्धाश्रम। उन्होंने अपनी गर्दन घुमाकर बाई ओर देखा, वहाँ भी एक बोर्ड टंगा हुआ था जिस पर लिखा था "आशा की किरण" अनाथाश्रम। अब शर्मा जी ने अपनी दायीं ओर देखा तो वहाँ लिखा था "आशा की किरण" चिकित्सालय।

शर्मा जी कुछ समझ पाते इससे पहले ही उनका बेटा सूरज बोला, मुझे माफ करना पिताजी, पिछले एक साल से मैं इस इमारत को बनवाने में जुटा हुआ हूँ। माँ के देहान्त के बाद मैने सोच लिया था कि मुझे आगे क्या करना है। मैंने अपनी सारी जमा-पूँजी इस इमारत को खड़ी करने में लगा दी है और मैं चाहता था कि जल्द से जल्द इसे तैयार करवा पाऊँ ताकि आज के दिन आप इस इमारत का शुभारंभ कर सकें। आज माँ की बरसी है। इसी कारण में आपका ध्यान अच्छी तरह से नहीं रख पाया।

सूरज ने कहा कि मुझ जैसे एक अनाथ बच्चे को अपनाकर आपने इस लायक बनाया। मैं चाहता हूँ कि जो प्यार और स्नेह आपने दिया वही प्यार- वही स्नेह दुनिया के हर अनाथ बच्चे को मिले। जिस सम्मान के आप हकदार हो, वही सम्मान हर बुजुर्ग को मिले। मैंने सोच लिया है कि अब मैं यहीं पर रहकर जरूरतमंदों की सेवा करूँगा और साथ ही साथ आपकी सेवा भी करूंगा।

शर्मा जी व्हील चेयर पर बैठे-बैठे सोचने लगे "ये सच है कि मौत के साए से ज़िंदगी जीत नहीं पाती, परन्तु यह भी सच है कि जिन्दगी के कारवाँ ही मौत को हराते हैं।"

अचानक ही शर्मा जी के शरीर में एक शक्ति का संचार हुआ और वे अपनी व्हील चेयर से खड़े हो गए। यह देख सूरज की खुशी का ठिकाना ना रहा। दोनों बाप बेटे ने एक दूसरे को गले से लगा लिया। शर्मा जी ने अचानक मिले इस बेहतरीन तोहफे के लिए मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया। शर्मा जी ने बेटे से कहा चलो बेटा, इमारत का शुभारंभ करते हैं और ऊपर आकाश की ओर देखा, आसमान में सूरज बहुत तेज चमक रहा था। दोनों बाप बेटे आगे की ओर बढ़े, दोनों की आँखों में आँसू थे।

"स्वामी विवेकानन्द जी ने भी एक बार कहा था - जो दूसरों के लिए जीता है, बस वहीं जीता हैं।"

बदलाव

चलो चले यारों दूर कही चलते हैं।।
अपने सपनों का आशियाना
वही चल बनाते हैं ।
इस भीड़ से अलग सन्नाटों में कहीं
जहां सुन सके हम खुद को चल वही चलते हैं ।
ये लोगों का शोर
ये सुविधाओं का जाल
इनसे कहीं दूर
कुछ कच्ची पक्की जिदंगी
ऊंचे खाली रास्ते
पेड़ों की छांव में
बैठ दो बातें करते हैं।
चलो चलें यारों दूर कहीं चलते हैं।।

ऊंची इन इमारतों से
काले शीशे चालों से
आती अंधेरी रोशनी से
दूर कहीं चलते हैं ।
ठंडी गर्म हवाओं से
महकी हुई धाराओं से
जहां शीतल धारा बहती हो
हवाएं नर्म रहती हो
घर वहीं करते हैं ।
चलो चले यारों दूर कही चलते है।।

इन मतलबियों से
इन चालाकियों से
दौड़ धूप की वादियों से
कहीं दूर चलते हैं ।
ये मुर्ग मसाला अंध भोग से
सादगी की ओर चलते हैं
चलो चलें यारों दूर कहीं चलते हैं ।।

विवेक गुप्ता
प्रधान रोकड़िया
तेलियाबाग शाखा
वाराणसी अंचल

विश्व हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में हिन्दी भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टि

आर्थिक विकास एवं मंहगाई - प्रबंधन एवं चुनौतियाँ

अमरेन्द्र कुमार अमर
वरिष्ठ प्रबंधक
फील्ड महाप्रबंधक कार्यालय
पुणे

आर्थिक वृद्धि का तात्पर्य एक समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि से है। यह किसी देश की अर्थव्यवस्था के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक है। तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, आर्थिक विकास कई देशों के लिए एक प्राथमिक लक्ष्य बन गया है, क्योंकि यह सीधे तौर पर देश की प्रगति के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है, जैसे गरीबी में कमी, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, जीवन स्तर में सुधार और सरकारी राजस्व में वृद्धि।

आर्थिक विकास के परिणामों में से एक महँगाई का मुद्दा है। महंगाई समय के साथ किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर वृद्धि को संदर्भित करती है। महंगाई पैसे की क्रय शक्ति को नष्ट कर देती है और लोगों के जीवन स्तर को प्रभावित करती है, विशेषकर निश्चित आय वाले लोगों के जीवन स्तर को प्रभावित करती है। इसलिए, आर्थिक विकास और महंगाई के बीच संबंध को समझना महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास विभिन्न तरीकों से महंगाई को जन्म दे सकता है। सबसे पहले, उपभोक्ता मांग में वृद्धि, जो अक्सर आर्थिक विकास के साथ होती है, के परिणामस्वरूप कीमतों में वृद्धि हो सकती है। जब लोगों के पास रोजगार के बढ़ते अवसरों और उच्च आय के कारण खर्च करने के लिए अधिक पैसा होता है, तो वे अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करते हैं। इससे अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त मांग पैदा हो सकती है, जिससे कीमतें बढ़ेंगी। इसके अतिरिक्त, बेहतर व्यावसायिक स्थितियों और बढ़े हुए निवेश से उत्पादन लागत बढ़ सकती है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

इसके अलावा, आर्थिक विकास "मांग-पुल" प्रभाव के माध्यम से महंगाई के माहौल को जन्म दे सकता है। जैसे-जैसे वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती है, उत्पादकों को अल्पावधि में इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है। इससे अतिरिक्त मांग की स्थिति पैदा हो सकती है, जहां मांग की गई वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा आपूर्ति की मात्रा से अधिक हो जाती है। जवाब में, निर्माता आपूर्ति और मांग को संतुलित करने के लिए कीमतें बढ़ा सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप महंगाई होगी।

इसके अलावा, आर्थिक विकास "लागत-पुश" प्रभाव के माध्यम से महंगाई भी उत्पन्न कर सकता है। जब कोई अर्थव्यवस्था तेजी से विकास का अनुभव करती है, तो श्रम की कमी हो सकती है, जिससे मजदूरी और उत्पादन लागत में वृद्धि हो सकती है। इन उच्च लागतों को अक्सर उच्च कीमतों के माध्यम से उपभोक्ताओं पर डाला जाता है, जो महंगाई में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, यदि आर्थिक विकास के साथ-साथ कच्चे माल या ऊर्जा के आयात में वृद्धि होती है, तो इन इनपुटों के लिए अंतर्राष्ट्रीय कीमतें बढ़ने से घरेलू कीमतों में भी वृद्धि हो सकती है।

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आर्थिक वृद्धि और महंगाई हमेशा साथ-साथ नहीं चलती है। सरकारें और केंद्रीय बैंक महंगाई के दबाव को प्रबंधित करने और मूल्य स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे अक्सर महंगाई को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों को अपनाते हैं, जैसे ब्याज दरों को समायोजित करना, धन आपूर्ति को विनियमित करना और कर नीतियों को लागू करना। एक आदर्श स्थिति में, आर्थिक विकास और महंगाई को प्रभावी ढंग से संतुलित किया जा सकता है, जिससे सतत विकास और बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित हो सके।

आर्थिक विकास और महंगाई का प्रबंधन व्यापक आर्थिक नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। आर्थिक वृद्धि का तात्पर्य एक समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से है। दूसरी ओर, महंगाई का तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि से है, जिससे पैसे की क्रय शक्ति में गिरावट आती है। आर्थिक विकास और महंगाई के प्रबंधन में स्थायी आर्थिक विकास प्राप्त करने और महंगाई के दबाव को नियंत्रित करने के बीच संतुलन बनाना शामिल है।

आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक: कई कारक आर्थिक विकास में योगदान करते हैं, जिनमें पूंजी निर्माण, तकनीकी प्रगति, मानव पूंजी विकास और संस्थागत ढांचा शामिल हैं। पूंजी निर्माण, जिसमें भौतिक और मानव पूंजी में निवेश शामिल है, उत्पादकता को बढ़ावा देता है और इसलिए, आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। तकनीकी प्रगति नवाचार और कुशल उत्पादन विधियों को अपनाने की सुविधा प्रदान करती है, जिससे उच्च उत्पादकता और आर्थिक विकास होता है। इसके अलावा, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से मानव पूंजी का विकास उत्पादकता बढ़ाता है और आर्थिक विकास में योगदान देता है। अंत में, एक मजबूत संस्थागत ढांचा, जिसमें अच्छी तरह से काम करने वाले वित्तीय बाजार, पारदर्शी कानूनी प्रणाली और प्रभावी शासन शामिल है, व्यवसायों और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

आर्थिक विकास का प्रबंधन: आर्थिक विकास प्रबंधन में मुख्य रूप से ऐसी नीतियों को लागू करना शामिल है जो दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करते हुए आर्थिक गतिविधि को प्रोत्साहित करती हैं। सरकारें आर्थिक विकास को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए विभिन्न मौद्रिक और राजकोषीय नीति उपकरणों का उपयोग करती हैं। मौद्रिक नीति से तात्पर्य आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा धन आपूर्ति और ब्याज दरों के नियंत्रण से है। ब्याज दरों को कम करने से उधार लेने को बढ़ावा मिलता है, जो आर्थिक विकास को उत्तेजित करता है, जबकि उच्च ब्याज दरों का उपयोग महंगाई के दबाव को नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है। दूसरी ओर, राजकोषीय नीति में कुल मांग को प्रभावित करने के लिए सरकारी खर्च और कराधान नीतियों में समायोजन शामिल है। विस्तारवादी राजकोषीय नीतियां, जैसे सरकारी खर्च में वृद्धि या कर कटौती, आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सकती हैं, जबकि संकुचनकारी राजकोषीय नीतियों का उद्देश्य खर्च में कटौती या कर वृद्धि के माध्यम से कुल मांग को कम करके महंगाई को नियंत्रित करना है।

महँगाई का प्रबंधन:

महँगाई का प्रबंधन या महंगाई को नियंत्रित करना मूल्य स्थिरता बनाए रखने और मुद्रा की क्रय शक्ति की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। महंगाई को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए कई उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, मौद्रिक नीति उपकरणों को महंगाई के दबाव को नियंत्रित करने के लिए नियोजित किया जा सकता है। कुल मांग को कम करने और महंगाई पर अंकुश लगाने के लिए केंद्रीय बैंक ब्याज दरें बढ़ा सकते हैं। दूसरे, महंगाई के विशिष्ट कारणों को संबोधित करने के लिए आपूर्ति-पक्ष उपायों को लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, खाद्य कीमतों को कम करने के लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाने या परिवहन लागत को कम करने के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार से महंगाई को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, श्रम लागत में अत्यधिक वृद्धि को रोकने के लिए वेतन मॉडरेशन नीतियां अपनाई जा सकती हैं, जो महंगाई में योगदान कर सकती हैं। अंत में, महंगाई के प्रबंधन में व्यापक आर्थिक स्थिरता और विवेकपूर्ण राजकोषीय नीतियों को बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। सरकारों को अत्यधिक बजट घाटे से बचना चाहिए और महंगाई के दबाव से बचने के लिए संसाधनों का कुशल आवंटन सुनिश्चित करना चाहिए।

आर्थिक विकास और महंगाई को संतुलित करना: आर्थिक विकास और महंगाई के प्रबंधन के लिए स्थायी आर्थिक विकास प्राप्त करने और अत्यधिक महंगाई से बचने के बीच एक नाजुक संतुलन बनाने की आवश्यकता होती है। अत्यधिक आर्थिक विकास से अर्थव्यवस्था में अत्यधिक गर्मी, अस्थिर उपभोग पैटर्न और महंगाई का दबाव हो सकता है। दूसरी ओर, महंगाई को नियंत्रित करने के लिए कड़े उपाय आर्थिक विकास को अवरुद्ध कर सकते हैं। संतुलन प्राप्त करने में मध्यम अवधि के परिप्रेक्ष्य को अपनाना और प्रति-चक्रीय नीतियों को नियोजित करना शामिल है।

प्रति-चक्रीय नीतियों का उद्देश्य मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों को तदनुसार समायोजित करके आर्थिक विस्तार और संकुचन को कम करना है। उदाहरण के लिए, उच्च आर्थिक विकास की अवधि के दौरान, महंगाई को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक नीति को कड़ा किया जा सकता है, जबकि कम वृद्धि की अवधि के दौरान, अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए विस्तारवादी राजकोषीय नीतियों को अपनाया जा सकता है।

आर्थिक विकास और महंगाई का प्रबंधन एक जटिल कार्य है जिसके लिए विभिन्न कारकों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। महंगाई के दबावों को नियंत्रित करते हुए सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए सरकारों को उचित मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों को लागू करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, एक स्थिर व्यापक आर्थिक माहौल बनाए रखना, तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहित करना, मानव पूंजी में निवेश करना और मजबूत संस्थागत ढांचे को बढ़ावा देना आर्थिक विकास और महंगाई को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक है। दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार के लिए इन उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

आर्थिक वृद्धि का तात्पर्य किसी अर्थव्यवस्था में समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और खपत में वृद्धि से है। इसे अक्सर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) जैसे संकेतकों का उपयोग करके मापा जाता है। किसी देश के विकास के लिए आर्थिक वृद्धि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन स्तर में सुधार करती है, रोजगार के अवसर बढ़ाती है और सरकार के लिए राजस्व का एक स्थिर स्रोत प्रदान करती है। हालाँकि, लाभ के साथ-साथ आर्थिक विकास विभिन्न चुनौतियाँ भी लाता है, जिनमें से एक महँगाई का मुद्दा है। महंगाई, जिसे महंगाई के रूप में भी जाना जाता है, किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर वृद्धि को संदर्भित करती है।

आर्थिक विकास की चुनौतियाँ:

मुद्रा स्फ़ीति:

जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है, वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती है, जिससे सीमित आपूर्ति के कारण कीमतें बढ़ जाती हैं। जब वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ती मांग को पूरा नहीं कर पाती है, तो इसका परिणाम महंगाई होता है। महंगाई व्यक्तियों की क्रय शक्ति को नष्ट कर देती है और जीवन स्तर में गिरावट ला सकती है, खासकर कम आय वाले परिवारों के लिए। भोजन और ईंधन जैसी आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतें व्यक्तियों और परिवारों के जीवनयापन की समग्र लागत पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं।

आय असमानता:

हालाँकि आर्थिक वृद्धि का रोजगार दरों और समग्र आय स्तरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन यह धन के समान वितरण की गारंटी नहीं देता है। वास्तव में, यदि लाभ कुछ व्यक्तियों या समाज के वर्गों के हाथों में केंद्रित हो तो आर्थिक विकास आय असमानता को बढ़ा सकता है। इससे सामाजिक अशांति और राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है क्योंकि जो लोग पीछे रह जाते हैं वे हाशिए पर और वंचित महसूस करते हैं।

वातावरण संबंधी मान भंग:

आर्थिक विकास अक्सर पर्यावरण की कीमत पर होता है। बढ़ते औद्योगीकरण और उपभोग पैटर्न से प्राकृतिक संसाधनों की कमी, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देता है। इससे लंबे समय में आर्थिक विकास की स्थिरता और बिगड़ते पर्यावरण में भावी पीढ़ियों के पनपने की क्षमता के बारे में चिंताएं पैदा होती हैं।

बुनियादी ढ़ांचे का तनाव:

जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है, सड़क, पुल, हवाई अड्डे और आवास जैसे बुनियादी ढाँचे की मांग भी बढ़ती है। हालाँकि, बुनियादी ढाँचे के विकास की गति आर्थिक विकास दर के अनुरूप नहीं रह सकती है, जिससे मौजूदा बुनियादी ढांचे पर दबाव पड़ेगा और सेवाओं का अपर्याप्त प्रावधान होगा। इससे उत्पादकता, जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है और आगे के आर्थिक विकास में बाधा आ सकती है।

सामाजिक अव्यवस्था:

आर्थिक विकास सामाजिक अव्यवस्था को जन्म दे सकता

है क्योंकि जीवन के पारंपरिक तरीके बाधित हो गए हैं। उदाहरण के लिए, तीव्र शहरीकरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण आबादी का विस्थापन हो सकता है और पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ टूट सकती हैं। इससे बेरोजगारी, अपराध और सामाजिक असमानता जैसी कई सामाजिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

चुनौतियों से निपटना:

मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां:

महंगाई से निपटने के लिए, सरकारें ब्याज दरें बढ़ाने, ऋण को कड़ा करने और सरकारी खर्च को कम करने जैसी मौद्रिक नीतियां लागू कर सकती हैं। राजकोषीय नीतियां, जैसे कराधान बढ़ाना या राजकोषीय घाटे को कम करना, महंगाई को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास के परिणामों को प्रबंधित करने में भी मदद कर सकता है।

सामाजिक सुरक्षा जाल:

कमजोर आबादी पर बढ़ती कीमतों के प्रभाव को कम करने के लिए सरकारें सामाजिक सुरक्षा जाल स्थापित कर सकती हैं। नकद हस्तांतरण, रियायती भोजन और ईंधन और किफायती आवास कार्यक्रम जैसी पहल महंगाई से प्रभावित लोगों को अस्थायी राहत प्रदान कर सकती हैं।

सतत विकास:

सरकारों और व्यवसायों को यह सुनिश्चित करने के लिए टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता है कि आर्थिक विकास पर्यावरण की कीमत पर न हो। नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश, हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए नीतियों को लागू करना कुछ ऐसी रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग पर्यावरणीय चिंताओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है।

शिक्षा एवं कौशल विकास:

आय असमानता और सामाजिक अव्यवस्था को दूर करने के लिए शिक्षा और कौशल विकास में निवेश करना महत्वपूर्ण है। यह व्यक्तियों को बढ़ती अर्थव्यवस्था में भाग लेने, रोजगार के अवसर खोजने और आय अंतर को कम करने में सक्षम बनाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुंच प्रदान करने से व्यक्तियों को बदलते आर्थिक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल से लैस किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

किसी राष्ट्र के विकास के लिए आर्थिक वृद्धि महत्वपूर्ण है, लेकिन यह महंगाई या महँगाई के प्रबंधन की चुनौती भी लाती है। आर्थिक विकास की उत्तेजना को संतुलित करने और मूल्य स्तरों को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के सावधानीपूर्वक कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। महंगाई का प्रबंधन, विशेष रूप से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, महंगाई की अपेक्षाओं और संरचनात्मक मुद्दों जैसे कारकों से और भी जटिल हो जाता है। इन चुनौतियों का समाधान करने और स्थिर मूल्य स्तरों के साथ सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी संचार, पारदर्शिता और व्यापक नीति दृष्टिकोण आवश्यक हैं ।

हिन्दी ही जननी

पुलों को पार करती है, सड़क तैयार करती है,
परायों को भी अपना मान कर स्वीकार करती है,
सिर्फ भाषा नहीं हिन्दी, अपितु माता हमारी है,
ये हिन्दी ही है जो इस देश को परिवार करती है।

मोती तो हैं गुथे कई, भारत माँ के आँचल में,
हिन्दी धागा है, सबको पिरोकर हार करती है
बड़प्पन होता है सबका, स्वयं लघु रूप धरने में,
कभी देखा है क्या हिन्दी को अहंकार करती है।

महता और बढ़ जाती है हिन्दी की दिल में,
जब अपनी बहनों का स्वयं मनुहार करती है।

हम माँ को भूल जाते हैं, नहीं माँ भूलती है हमको
हमारी सोच से ज्यादा, ये हमको प्यार करती है।

सौरभ मणि त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबन्धक
वाराणसी

स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका

अभिषेक कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
चेन्नई अंचल

ये एक कड़वी सच्चाई है कि आज़ादी के बाद हिंदी हमारी राजभाषा तो बन गई, लेकिन सरकारी प्रणाली में रम चुकी औपनिवेशिक काल की अंग्रेजियत अभी तक बनी हुई है। जिसकी वजह से अधिकतर मौलिक कामकाज अंग्रेजी में होता है और उसका अनुवाद करके हिंदी में काम करने की औपचारिकताओं को पूरा किया जाता है। हालांकि ये बात सभी सरकारी विभागों पर लागू नहीं होती है। किन्तु आज भी बहुत से सरकारी अधिकारी अँग्रेज़ी में ही कामकाज करने में सहज महसूस करते हैं और चूंकि सरकारी मशीनरी में तो देशी भाषाओं को अपनाने के लिए फिर भी बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं जबकि प्राइवेट संस्थाओं में तो अंग्रेजी का इतना बोलबाला है कि हिंदी का पत्रकार भी अपना परिचय-पत्र अंग्रेजी में बनाकर प्रस्तुत करता है। लेकिन इतिहास में एक कालखंड ऐसा भी रहा है जब हमारे सम्पूर्ण देश की जनता को हिन्दी ने एकजुट करने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

लगभग दो शताब्दियों की दासता झेलने के पश्चात हमारे भारतवर्ष को अंग्रेज़ों के शासन से स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। अपनी मातृभूमि को स्वतंत्रता दिलाने के लिए हमारे देश के हज़ारों लोगों ने अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए थे। अनेकों महिलाओं ने स्वतंत्रता के आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। इन सभी लोगों का बलिदान सही अर्थों में राष्ट्र के लिए समर्पित था। इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इन्हें क्रांतिकारी अथवा स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा मिला। इन स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की जनता के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक ज्वलंत भावना पैदा की थी। स्वाधीनता के इस आंदोलन में भारतीय भाषाओं का योगदान अभूतपूर्व था तथा हिंदी ने स्वाधीन राष्ट्र की भावना को जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई थी। स्वाधीनता आंदोलन के अधिकतर महान नेता गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों से संबंध रखते थे जैसे- महात्मा गांधी गुजराती थे, सी. राजगोपालाचारी मद्रासी थे, राजा राम मोहन रॉय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर व देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय जैसे महान दार्शनिक व क्रांतिकारी बंगाली थे, ऐसे ही देश के अलग-अलग प्रांतों के क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को खपा दिया। उन्होंने स्वाधीनता की भावना से देश की जनता को एकसूत्र में बांधने के लिए के लिए हिंदी भाषा को वरीयता दी। 'भारत माता की जय' और 'जय हिन्द' जैसे कालजयी नारों ने हिन्दी भाषा को स्वाधीनता संग्राम की भाषा बना दिया। इन नारों के साथ-साथ संस्कृत का नारा 'वंदे मातरम' और उर्दू के नारे 'हिंदुस्तान ज़िन्दाबाद' और 'इंकलाब ज़िन्दाबाद' भी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों के तकिया कलाम बने। भगत सिंह और उनके साथियों ने 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' नामक क्रांतिकारी समूह का गठन किया जिसका नारा 'इंकलाब ज़िन्दाबाद' था। भगत सिंह भी हिन्दी भाषा के बहुत अच्छे जानकार थे। वो अपने साथियों को अक्सर हिन्दी में पत्र लिखा करते थे।

बाल गंगाधर तिलक भी स्वतंत्रता की लड़ाई में एक अग्रणी नेता के रूप में उभरे तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अतुलनीय रहा। उनका एक कथन जन-मानस के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ। उन्होंने कहा था – "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूँगा"। स्वराज के इस तर्क से ही स्वभाषा के उपयोग की धारणा ने जन्म लिया और स्वाधीनता संग्राम में विदेशों

से पढ-लिख कर आए भारतीयों ने स्वदेशी भाषाओं में स्वतन्त्रता के साहित्य का निर्माण करना शुरू किया। हिन्दी भाषा के विषय में बाल गंगाधर तिलक का मानना था कि भारतवर्ष में हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो हमारे देश की राष्ट्रभाषा बन सकती है। हिन्दी भाषा का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका" में उन्होंने लिखा था कि "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आंदोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है"। तिलक जहाँ हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते थे वहीं देवनागरी को हिन्दी की लिपि मानते थे। तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए वर्ष 1903 में 'हिन्दी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुंचाने के लिए केवल हिन्दी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है। साथ ही तिलक ने अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में भाषण देने की परंपरा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिन्दी का बहुत अच्छा उपयोग किया। वो जब भी विदेश यात्रा पर जाते थे केवल तभी अंग्रेजी बोलते थे अथवा जब देश में मौजूद किसी अंग्रेज़ अधिकारी के साथ वार्तालाप या पत्राचार करना होता था वो केवल तभी अंग्रेजी का उपयोग करते थे। जबकि अपने देश में रहते हुए उन्होंने सदैव हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा गुजराती का ही उपयोग किया और उसे आत्मसात किया। उन्होंने समय-समय पर भारत की विशाल जनता को हिन्दी भाषा के महत्व के बारे में बताया और देश के सभी लोगों को हिन्दी को हिन्दी सीखने का अनुरोध किया। गांधीजी ने प्रारंभ से ही हिन्दी भाषा को स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका मानना था कि देश के स्वतंत्रता आंदोलन को किसी भारतीय भाषा में ही आगे बढ़ाया जा सकता है और हिन्दी ही वो भाषा है जो देश को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकती है। मैंने देशभर की यात्रा की है और ये पाया है कि हिन्दी हमारे देश के एक बहुत बड़े भू-भाग में बोली व समझी जानेवाली भाषा है। इसकी पहुँच बहुत व्यापक है। हिन्दी भाषा देश के दूर-दराज़ के क्षेत्रों में भी बोली व समझी जाती है। महात्मा गांधी और डॉ. एनी बेसंट द्वारा वर्ष 1918 में तमिलनाडु के मद्रास (अब चेन्नई) शहर में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई। वर्तमान में मद्रास में ही इस सभा का मुख्यालय मौजूद है। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करने और दक्षिण भारत के लोगों के बीच हिन्दी का उपयोग बढ़ाने और उसे लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से ही इस सभा की स्थापना की गई थी। गांधीजी के प्रयासों से ही वर्ष 1925 में काँग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया कि काँग्रेस पार्टी का, काँग्रेस की महासमिति और कार्यकारिणी समिति का कामकाज सामान्यत: हिन्दी या हिन्दुस्तानी में ही चलाया जाएगा। इसके बाद वर्ष 1925 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने की। यही नहीं, बल्कि गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इस सम्मेलन में हिन्दी में बोलकर हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। महात्मा गांधी ने नेताओं को हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हिन्दी के कई प्रचारकों को अलग-अलग जत्थों में देश के विभिन्न राज्यों में भेजा। उन्होंने स्वयं अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिन्दी भाषा का प्रचार करने के लिए दक्षिण भारत भेजा था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इसे अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानकर देशभर के विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिन्दी प्रचारक गए और वहाँ हिन्दी को प्रचारित करने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण ये हिन्दी प्रचारक स्वतंत्रता आंदोलन में और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी लोगों को जागृत करते हुए उनके बीच हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते रहे। गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिन्दी का समर्थन करने लगे और पूरे भारत में स्वाधीनता आंदोलनों का प्रभाव दिखने लगा। ये वो समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिन्दी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे।

पंजाब में स्वाधीनता आंदोलनों की अलख जगाने और हिन्दी के प्रचार का पूरा श्रेय लाला लाजपत राय को जाता है। पंजाब में लालाजी ने हिन्दी का बड़ा समर्थन किया। उन्हीं के प्रयासों से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी को स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया। एक ओर जहां हिन्दी के माध्यम से देश को एकसूत्र में पिरोकर अंग्रेज़ो के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार किया जा रहा था वहीं अन्य भाषाओं में सृजित स्वतंत्रता संबंधी विचारों और साहित्य का अनुवाद हिन्दी में होने से हिन्दी भाषा भी समृद्ध हो रही थी।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का नाम भी उस दौर के हिन्दी प्रचारकों में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। मालवीय जी न केवल एक हिन्दी प्रचारक थे बल्कि हिन्दी आंदोलन के एक अग्रणी नेता भी थे। उन्होंने हिन्दी भाषा की अभूतपूर्व सेवा की। हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिए ख्यातिलब्ध मालवीय जी ने देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई. में विविध प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिन्दी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि "उसे फ़ारसी-अरबी के बड़े-बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी"। सम्मेलन के एक अन्य वार्षिक अधिवेशन (बम्बई-1919) के सभापति पद से उन्होंने हिन्दी-उर्दू के प्रश्न को धर्म का नहीं अपितु राष्ट्रीयता का प्रश्न बतलाते हुए उद्घोष किया कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। समस्त देश की प्रांतीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आएगा कि जिस भांति अँग्रेज़ी विश्वभाषा हो रही है उसी भांति हिन्दी का भी सर्वत्र प्रचार होगा। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी के अंतर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया।

नारी

कई देवियों का प्रतिरूप है,
अत्याचार के विनाश का स्तूप है,
क्रोध में है सबसे शक्तिशाली,
इससे बड़ा नहीं कोई बलशाली ।

सुंदरता का प्रतीक है,
समर्पण में है सबसे आगे,
हर परिवार की रोशनी है,
पढ़े तो करे कई पुश्तों को आगे।

अबला नहीं, आत्मविश्वाश की मूरत है,
पुतला नहीं, भवनाओं का भंडार है,
क्रोध में आये तो सर्वविनाश है,
अपना ले तो हर जगह प्रकाश है।

एक रूप में कहां समाती,
कई किरदार तुम निभाती,
सूर्य की किरण की भांति,
सबका संसार तुम जगमगाती।

सपनों की पहचान कर,
तोड़ पाबंदी, जीत की तैयारी कर,
भीड़ में नहीं, तू अकेली चल,
छोंड़ जंजीरे, सबसे आगे निकल।

तू अपनी पहचान बना,
उम्मीदों से परे जाकर दिखा,
अब होगी तेरी बारी,
क्योंकि सृष्टि के सृजन का प्रतीक है नारी।

मनस्वी सिंह परिहार
उदयपुर शाखा
जोधपुर अंचल

वित्तीय समावेशन की अवधारणा और आर्थिक विकास के लिए इसका महत्व

स्नेहा मड़के
सोनलवाडा शाखा
नागपुर अंचल

गरीबी ! गरीबी ! गरीबी ! सोने की चिडिया कहे जाने वाले भारत देश को अंग्रेजों ने गरीबी के कूएँ में ढकेल दिया था। परंतु आज स्वतंत्रता प्राप्ति के 76 साल पश्चात् भारत का चित्र अलग ही दिखाई पड़ता है। भारत सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिये उठाए गए कदमों में सर्वश्रेष्ठ कदम निश्चित रूप से वित्तिय समावेशन ही है।

देश के प्रधानमंत्री द्वारा 15 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री जन-धन योजना नामक एक राष्ट्रीय वित्तीय समावेशन मिशन की घोषणा की गई थी। इस योजना को 28 अगस्त, 2014 को औपचारिक रूप में शुरू किया गया था। वित्तीय समावेशन से तात्पर्य है समाज के पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना। ये वित्तीय सेवाएँ इन लोगों को कम से कम मूल्य पर मिलनी चाहिए। फिलहाल हम जो प्रमुख वित्तीय सेवाए इस वर्ग को प्रदान कर रहे है इनमे ऋण, भुगतान, धनप्रेषण और बीमा सेवाएँ शामिल है।

वित्तीय समावेशन 21वीं सदी की शुरुआत से ही महत्वपूर्ण माना जाने लगा था और आज 2023 में लगभग सभी विकासशील देशों के केन्द्रीय बैंको के मुख्य लक्ष्यों में वित्तीय समावेशन भी शामिल हो गया है। संयुक्त राष्ट्र वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को निम्नानुसार परिभाषित करता है: "सभी परिवारों के लिए बचत या जमा सेवाएँ, भुगतान और स्थानांतरण सेवाएँ, क्रेडिट और बीमा सहित वित्तीय सेवाएँ उचित लागत पर उपलब्ध करवाना।"

संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने 21 दिसंबर, 2003 को यह कहा था कि वास्तविकता यह है कि दुनिया के सबसे गरीब लोगों में अभी भी स्थायी वित्तीय सेवाओं तक पहुंच की कमी है, भले ही यह बचत हो, क्रेडिट हो या बीमा हो। बडी चुनौती उन बाधाओं को दूर करना है, जो लोगों को वित्तीय क्षेत्र में पूर्ण भागीदारी से बाहर कर देते हैं। साथ में हम समावेशी वित्तीय क्षेत्रों का निर्माण कर सकते हैं जो लोगो को अपने जीवन में सुधार करने में मदद करें।

नैशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट के साथ साझेदारी में, संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य वंचित वर्ग के लिए एक उचित वित्तीय उत्पाद विकसित करके और वित्तीय साक्षरता को मजबूत करने वाली उपलब्ध वित्तीय सेवाओं संबंधी जागरुकता बढाकर विशेष रूप से महिलाओं और गरीबों को इसमें शामिल करना है।

आज 2023 में भारत की कुल जनसंख्या संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफ़पीए) की "द स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट 2023" के अनुसार 1,428.6 मिलियन यानी 142.86 करोड हो गई है। नवीनतम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफ़एचएस-5; 2019-21) के आधार पर राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) का यह दूसरा संस्करण दो सर्वेक्षणो, एनएफ़एचएस-4 (2015-16) के बीच बहुआयामी गरीबी को कम करने में भारत की प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। यह नवंबर 2021 में लॉन्च की गई भारत की राष्ट्रीय एमपीआई की बेसलाइन रिपोर्ट पर आधारित है।

रिपोर्ट के अनुसार, 2015-16 और 2019-21 के बीच 135 मिलियन लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं। देश में बहुआयामी गरीबों की संख्या मे 09.89 प्रतिशत अंको की उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई, जो 2015-16 में 24.85 से बढकर 2019-21 मे 14.96% हो गई। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में सबसे तेज गिरावट देखी गई, 32.59% से 19.28% तक। 36 राज्यों और क्रेद्र शासित प्रदेशों और 707 प्रशासनिक जिलों के लिए बहुआयामी गरीबी अनुमान प्रदान करते हुए, रिपोर्ट में कहा गया है कि बहुआयामी गरीबों के अनुपात में सबसे तेज कमी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान राज्यों में देखी गई।

2021 के ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत 101 वें स्थान पर था। संयुक्त राष्ट्र मानव विकास सूचकांक में 131 वें स्थान पर था।

मौजुदा समय में हर छोटे विक्रेता को सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा ऋण सुविधा उपलब्ध है। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत स्ट्रीट वेंडरों को ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। डिजिटल इंडिया के तहत हर छोटा विक्रेता अपने पास क्यु आर कोड रखता है और बडी ही आसानी से बिना बैंक जाए, अपने रोजमर्रा के आर्थिक व्यवहार फोन द्वारा ही निपटा लेता है। यह वित्तीय समावेशन के लिए बहुत बडी उपलब्धि है। जिस वर्ग के पास सन् 2000 में बैंक खाता होना बहुत बडी बात माना जाता था, उस वर्ग के बैंक में न केवल भारी संख्या में बैंक खाते हैं बल्कि विविध स्टार्ट अप योजनाओं की वजह से इन खातों में अच्छा-खासा संव्यवहार भी होता है। बहुत से जनधन खाते अब साधारण बचत खातों में रूपांतरित भी हो गए हैं।

आर्थिक समावेशन को अधिक सक्रिय बनाने हेतु बैंको का समपर्ण बहुमूल्य है। बैंको ने जहा छोटे से छोटे गावों मे बिजनेस कोरेसपोंडेंट (Bussiness Correspondent) की सहायता से वित्तिय सुविधाएं उपलब्ध कराई है, वहीं ऋण सुविधा उपलब्ध कराकर उन्हे रोजगार भी दिलवाया है। क्यु आर कोड "भीम यूपीआय", पास मशीन इत्यादि डिजीटल उपकरणों की मदद से इनके रोजाना के आर्थिक व्यवहारो को आसान कर दिया है। भारत देश के लिए वित्तीय समावेशन की दिशा में यह बहुत बडी उपलब्धि है।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार साल 2005-2006 में जहाँ 55% (करीब 64.45 करोड) लोग गरीबी रेखा से नीचे थे, वहीं साल 2019-20 और 2020-21 तक यह संख्या घटकर 16% (23 करोड) हो गई है। इस हिसाब से भारत में इन 15 सालों में 41.5 करोड लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं जिससे गरीबी सूचकांक में भारत का प्रदर्शन बेहतर हुआ है।

वित्तीय समावेशन की वजह से न केवल लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है बल्कि प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योती योजना और अटल पेंशन योजना द्वारा उनके परिवारो को कम से कम निवेश पर सुरक्षा कवच भी दिया गया है। अर्थात वित्तीय समावेशन की वजह से भारत में एक नई क्रांति आई है और इसका सीधा परिणाम भारत को आर्थिक दृष्टि से विकसित बनाने में हुआ है।

वित्तीय समावेशन और बैंक मित्र

बैंक मित्र आधार शिखर है, बढ़ती भागीदारी है,
जनधन हो या सुरक्षा बीमा, विकसित जिम्मेदारी है।
द्रुतगामी है ट्रेन वित्त की, दौड़ रही बैंकिंग स्टेशन,
सबका साथ, हो रहा विकास, हो रहा वित्त का समावेशन।

जी.डी.पी. बढ़ रही निरंतर, अर्थव्यवस्था बुलेट ट्रेन है,
इंफ्रास्ट्रक्चर क्षितिज छू रहा, देश मुख्य है देश मेन है।
वैश्विक छवि है रही सुधर, बढ़ रहा शौर्य साम्राज्य है,
22 जनवरी अजर अमर है, प्रभु राम का राज्य है।

बैंकिंग ही सेक्टर है ऐसा, अर्थव्यवस्था मेरुदण्ड है,
जनधन - मोबाइल आधार, परिवर्तन है, विजय प्रचंड है।
कानूनों में हो रहा सुधार, एम.एस.एम.ई. नई परिभाषा है,
बैंक मित्र ही नई राह है, बिजनेस ग्रोथ नई आशा है।

हैंडल विद केयर बी.सी. को मूलमंत्र है, नया तंत्र है,
निगरानी हो सघन नियंत्रित, बिजनेस करने को स्वतंत्र है।
फाइव ट्रिलियन अर्थव्यवस्था, सपना करना है साकार,
बैंक मित्र और बैंक सखी हैं, बैंकों के बढ़ते आकार।

खाता हो चाहे नया खोलना, अटल पेंशन करना हो,
सुरक्षा बीमा, जीवन बीमा, जमा निकासी करना हो।
मुद्रा हो चाहे ओ.डी.ओ.पी., विश्वकर्मा चाहे, के.सी.सी. हो,
वसूली हो चाहे लीड जनरेशन, बिजनेस जो भी करना हो।

बैंक मित्र है साथ निभाते, शाखा के व्यापार में,
लोकल टच है शक्ति इनकी, बिज़नेस के आकार में।
सी. रंगराजन रिकमन्डेशन, एक नया अध्याय है,
बैंकिंग सेक्टर नया क्षितिज है, नई चेतना, न्याय है।

मनीष पाठक
मुख्य प्रबंधक एवं अग्रणी जिला प्रबंधक
लखनऊ

स्वप्न संयोग

सुरेश राय
शाखा प्रबंधक
अमरापाड़ा
धनबाद अंचल

पुराने जमाने में कहावत थी "जिसकी लाठी उसकी भैंस", आज भी वही हाल है लखन काका... कहते हुए बिरजू कुछ सूखे घास की गठरी सर पर लिए लखन के बगल से निकला। लखन 55 साल का दुबला पतला बूढ़ा मैली धोती पहने और गमछा सर पर बांधे हुए अपने खेत की फसल को सूखने से बचने लायक बनाने का निरर्थक प्रयास कर रहा था। इस बार बारिश तो हुई नहीं सो खेत सूखे ही रह गए। बेचारा लखन, इस हाल में कहीं और दिन भर मजदूरी करने के लायक भी नही था। उम्र के साथ गरीबी और भूख ने उसे उम्र से ज्यादा बूढ़ा बना दिया था। लखन के खेत से कुछ दूरी पर ही जमींदार के खेतों में हरियाली थी। बात ये थी कि जमींदार के खेतों को सिंचाई के लिए पानी उसके तालाब से मिल जाता था।

लखन की पत्नी कमला घर का काम निपटाकर पति का हाथ बटाने आ गई। आज धूप भी इतनी तेज थी मानो ये भादो ना होकर चैत का महीना हो। दोनों चुपचाप अपने काम में व्यस्त थे कि तभी कमला ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "एक बार जमींदार से बात करके देखो। हाथ पैर जोड़कर भी अगर, एक दो घंटे के लिए भी सही, पानी पटाने दें तो जान बचे।" लखन ने सर घुमाकर कमला को एक नज़र देखा पर कुछ ना बोला। वापस अपने काम मे लग गया। कमला थोड़ी नाराज़ हो गई।

रात को खाने के बाद घर के बरामदे में टूटी सी चारपाई पर लेटे हुए लखन के पास एक लोटा पानी रखकर कमला पास ही पड़े पीढ़े पर बैठ गई। घर मे बस ये दोनों ही थे, इनको कोई संतान न थी। लेटे लेटे लखन ने कमला से कहा, "मैं गया था जमींदार के घर।" कमला ने बड़ी उत्सुकता से पीढ़ा चारपाई के नजदीक खिसकाते हुए सवाल दागा, "अच्छा, तो क्या बात हुई? क्या वे राजी हो गए?" थोड़ी सी चुप्पी के बाद लखन बोला, "तैयार तो हुए पर बदले में आधी फसल चाहिये उनको और अगर फसल न हुई तो अगले साल हम अपने खेत में खेती नहीं करेंगे, हमारे खेत में वो अपनी फसल लगाएँगे।"

'ये क्या बात हुई? ये तो सरासर जुल्म है इन पैसेवालों का' गुस्से और बेबसी के मिले जुले भावों के साथ कमला बोली। लखन कुछ प्रतिक्रिया दिए बिना एक ओर करवट करके सो गया। खुमारी में कुछ बुदबुदा रहा था तो कमला भी चली गयी बचे खुचे काम खत्म कर सोने के लिए।

रात के अंतिम प्रहर में अचानक एक स्वर लखन को आवाज देते हुए उसके नजदीक आया। लखन ने देखा एक देवी जिनके चेहरे के ममतामयी तेज़ से वो स्थान प्रकाशित हो रहा थी। उसे समझ में नही आ रहा था कि ये क्या हो रहा है। उसने देवी की ओर जिज्ञासा भरी नज़रों से देखते हुए पूछा, "आप कौन हैं और यहाँ क्यों आईं हैं?"

"मैं तुम सब की माँ हूँ, प्रकृति माँ। तुम्हे दु:खी देखा तो चली आई तुम्हारे पास। क्या दुख है तुम्हें? इतने विचलित क्यों हो? जमींदार ने पानी नहीं दिया इसलिए?" देवी ने पूछा। लखन दोनों

हाथों को जोड़ देवी की चरणों मे जा गिरा और अपने मन के बोझ को निकालता चला गया, "माँ, आपको तो सब पता है माँ। मैं इतने कष्ट में हूँ, इतना असहाय हूँ। क्या इसलिए क्योंकि मैं गरीब हूँ? वो जमींदार बेईमानी करके भी सुख में है। उसके पास सिंचाई के लिए पानी है, उसकी फसल भी अच्छी है। पर मेरा क्या है माँ? मेरी फसल सूख रही है, वो भी जमींदार के भरोसे है क्योंकि पानी जमींदार की जागीर है।"

'जमींदार की जागीर?' मुस्कुराते हुए देवी ने कहा "जो प्रकृति का है वो भला किसकी जागीर हो सकती है? वो पानी को जमा तो कर सकता है पर पानी को रोक नहीं सकता है, पानी सबके लिए है।" इतना कहकर देवी ने अपने आँचल को पंखे की तरह हल्के से लखन के ऊपर लहरा दिया। लखन को पानी की छींटे अपने शरीर पर महसूस हुई। देवी जा चुकी थीं पर छींटे धीरे-धीरे तेज होती गई। लखन उन छींटों की थपेड़ों से सहसा नींद से जाग उठ खड़ा हुआ। आँखों को मलते हुए वो बाहर देख कर मानो उछल पड़ा। सुबह होने को थी और बाहर तेज़ बारिश शुरू हो गई थी। वो दौड़कर अंदर गया और कमला को जगाते हुए बोला "उठो कमला, देखो बाहर निकलकर, माँ ने हमें अपना आशीर्वाद दिया है कमला। कमला नींद से जाग गई थी पर उसे ये सब समझ नहीं आ रहा था, कैसा आशीर्वाद और किसने दिया? समझती भी कैसे, देवी तो लखन के सपने में आई थी। दोनों बरामदे पे आए तब कमला को बारिश दिखाते हुए बिरजू ने सपने की बात बताई।"

ये बारिश कल की तेज धूप के कारण हुई थी या प्रकृति माँ सच में आईं थीं या सिर्फ एक संयोग था, इस बात का तो पता नहीं। पर लखन और कमला के लिए ये माँ का आशीर्वाद था। दोनों निकल पड़े अपने खेत, बारिश में भींगते हुए, हर्षित मन और भींगी आंखों से प्रकृति माँ को धन्यवाद करते हुए।

गिरता दरख्त कुछ कह गया

दरख्त जो कई दशकों का साक्षी था
कालकालांतर में बुढ़ा हो चला था
आज चली तेज आँधी में गिर गया ।
वो जिसकी घनी छांव में न जाने रोज
कितने मुसाफिर शरण लिया करते थे
और तप्ती धूप में कुछ देर ही सही
तसल्ली की साँस लिया करते थे ।

न जाने कितनी छुट्टियों की दोपहर
उस दरख्त की छांव तले बैठकर मैं
सखियों से गुफ़्तगू किया करती थी।
कभी बाल्कनी से उस वृक्ष पर
पक्षियों के आवागमन और कलरव को
चुपचाप देखा व सुना करती थी ।

जाते जाते वह दरख्त स्मरण करा गया
कितने भी आप उच्चासीन हो जाओ
कितनी भी उपलब्धियां हासिल हो जाये
एक दिन तो जाना सभी का तय है।
बेहतर है हम वर्तमान को भरपूर जी लें
उपलब्धियां हम पर हावी ना होने पाये
नाकामियाँ हमारे उत्साह को तोड़ ना पाये
हर पल को खुलकर जिये और यादगार बना लें।

अर्चना प्रकाश
धर्मपत्नी श्री अजय कुमार
आंचलिक प्रबंधक मुजफ्फरपुर

कार्यनिष्पादन में वृद्धि हेतु कार्य स्थल पर सकारात्मक वातावरण की भूमिका

डिम्पल गंगानी
अधिकारी
न्यू राणिप शाखा
अहमदाबाद अंचल

सकारात्मक वातावरण से कार्मिकों के भीतर उत्साह एवं आनंद का संचार होता है जिससे उनकी उत्पादकता का स्तर बढ़ जाता है। यह कार्मिकों के रचनात्मकता,नवाचार और समस्याओं का समाधान करने के कौशल में सुधार करता है जिससे बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। कार्मिक अपनी भूमिका के प्रति अधिक प्रतिबद्ध होकर संगठन की सफलता में सक्रिय रूप से योगदान करते हैं और संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से अधिक प्रयास करने के लिए भी तैयार रहते हैं। सकारात्मक वातावरण कार्मिकों में संतुष्टि की भावना पैदा करता है। जब वे स्वयं को मूल्यवान और सम्मानित अनुभव करते हैं तो उन्हें अपने कार्य में आनंद आने लगता है और वह संगठन को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए स्वप्रेरित प्रयास करते हैं। ऐसा वातावरण सकारात्मक सोच, विश्वास और टीमवर्क की भावना को बढ़ावा देता है जिससे कार्मिकों के आपस में सहयोग करने, विचार साझा करने और सामंजस्य पूर्ण ढंग से मिलकर काम करने की संभावना बढ़ जाती है एवं इस प्रकार एक अधिक एकजुट और उत्पादक टीम बनती है। इससे निश्चित रूप से उत्पादकता का स्तर बढ़ जाता है। 'फील-गुड प्रोडक्टिविटी' पुस्तक के लेखक श्री अली अब्दाल का कथन है कि-

"सकारात्मक मनोभाव हमें अधिक जागरूक रखते हैं तथा हमारी संज्ञानात्मकता एवं आपसी तालमेल को बेहतर बनाते हैं। उत्पादकता, अनुशासन से अधिक इस बात पर निर्भर करती है कि कौन-सा काम/कार्यस्थल आपको खुशी देता है, तनाव से मुक्त रखता है और वहाँ कार्य करते हुए आप ऊर्जावान बने रहते हैं।"

सकारात्मक माहौल में कार्मिकों के लंबे समय तक संगठन में बने रहने की संभावना अधिक होती है तथा कार्मिक निर्णय या प्रतिशोध के डर के बिना विचारों, चिंताओं और प्रतिक्रियाओं को साझा करने में सहज महसूस करते हैं। ऐसे वातावरण से कार्मिकों और प्रबंधन के बीच आपसी विश्वास बढ़ता है जिससे सूचना और सहयोग का मुक्त प्रवाह संभव हो पाता है। सकारात्मक कार्य वातावरण एक सफल, संपन्न एवं टिकाऊ संगठन का आधार है। यह न केवल कार्मिकों को व्यक्तिगत लाभ पहुंचाता है बल्कि संगठन की समग्र वृद्धि एवं समृद्धि में भी योगदान करता है। खुश एवं प्रेरित कार्मिक असाधारण ग्राहक सेवा प्रदान करने की अधिक संभावना रखते हैं। सकारात्मक कार्य वातावरण होने से शीर्ष प्रतिभाएं संगठन की ओर आकर्षित होती हैं। भावी कार्मिक भी ऐसे संगठनों की खोज करते हैं जो उनकी भलाई को प्राथमिकता देते हैं तथा सकारात्मक कार्य संस्कृति प्रदान करते हैं। इससे कुशल पेशेवरों को आकर्षित करना और बनाए रखना आसान हो जाता है। कार्य वातावरण में कार्मिकों के मनोबल, कार्य स्थल संबंधों, प्रदर्शन, नौकरी से संतुष्टि और उनके स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता होती है। एक सकारात्मक कार्य वातावरण कार्मिकों को प्रसन्नचित एवं तरोताजा रखता है, एकाग्रता में सुधार करता है तथा कार्मिकों एवं नियोक्ताओं दोनों के लिए एक अच्छा कामकाजी दृष्टिकोण प्रदान करता है। दुनिया की अधिकांश शीर्ष कंपनियां कार्य स्थल के भौतिक लेआउट, उपयोग किए गए उपकरण, शोर और प्रकाश का स्तर, कार्य स्थल में संगीत सुनना, तापमान और सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल कर रही हैं जैसे संगठनात्मक संस्कृति, कार्य स्थल संचार शैली, सहकर्मियों और पर्यवेक्षकों के बीच संबंध, कार्मिकों को प्रदान किया गया समर्थन आदि।

एक सकारात्मक कार्य वातावरण उत्पादकता, रचनात्मकता और कार्मिकों की संतुष्टि को बढ़ावा देता है। इसकी स्पष्ट पहचान संचार, प्रभावी टीमवर्क, विविधता, सम्मान और कर्मचारी कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता से होती है। एक अच्छे कामकाजी माहौल का

महत्व कर्मचारियों के नौकरी खोज मापदंडों में परिलक्षित होता है। नियोक्ता भी कार्यालय के माहौल को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न तकनीकों को लागू कर रहे हैं। इसके लिए संगठन समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रहे हैं जिसमें कार्मिकों के साथ-साथ उनके परिवार को भी आमंत्रित किया जाता है तथा विजेताओं को विभिन्न पुरस्कार तथा प्रोत्साहन राशि देकर उनमें नई ऊर्जा पैदा की जाती है। जब संगठन कार्मिकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं तो कार्मिक को भी अपने संगठन पर गर्व होता है और वह संगठन की अपेक्षाओं से भी ऊपर जाने का हर संभव प्रयास करता है। कार्मिकों को संगठन के साथ होने पर सुरक्षित और घर जैसा महसूस होता है।

इसके विपरीत कार्यस्थल पर खराब माहौल व्यावसायिक तनाव, ईर्ष्या और कम मनोबल का कारण बन सकता है जो व्यक्तिगत और संगठनात्मक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है। यह भय, तनाव और अविश्वास के माहौल को बढ़ावा देता है एवं उत्पादन में कमी लाता है। प्रतिभाशाली कार्मिक सकारात्मक वातावरण की तलाश में संगठन छोड़ने का विकल्प चुन सकते हैं।

आजकल कई ऐसे क्लाउड आधारित सर्वेक्षण सॉफ्टवेयर बाज़ार में उपलब्ध हैं जिनका उपयोग कई कंपनियों द्वारा कार्मिकों की प्रतिक्रियाओं के डाटा को एकत्र करके सुधार के क्षेत्र की पहचान करने और सकारात्मक कार्य वातावरण बनाने में किया जाता है। ऐसे सॉफ्टवेयरों द्वारा कार्मिकों से कार्य जीवन संतुलन, सुविधाओं, लाभ, संचार संस्कृति आदि विषयों पर उनकी प्रतिक्रिया जानकर विभिन्न क्षेत्रों में सुधार संभव हो सकता है। जब कार्मिकों को प्रतिशोधात्मक कार्रवाई का डर होता है तो वे कार्य स्थल के बारे में अपने विचार और चिंताएं व्यक्त नहीं कर पाते। इस लिए ऐसे सॉफ्टवेयर एक गुमनाम फीडबैक संग्रह करने की व्यवस्था उपलब्ध करवाते हैं जिससे कार्मिकों को प्रतिशोध के डर के बिना ईमानदारी से फीडबैक प्रदान करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। एक बार डाटा एकत्र हो जाने के बाद ये सॉफ्टवेयर प्राप्त फीडबैक के आधार पर कंपनियों को कार्य योजना विकसित करने के लिए उपकरण प्रदान करता है। संगठन इसका उपयोग सुधार के क्षेत्र को प्राथमिकता देने और कर्मचारियों की चिंताओं को दूर करने हेतु कार्यनीति विकसित करने के लिए कर सकते हैं।

किसी भी संगठन की सफलता में कार्मिकों हेतु सकारात्मक वातावरण निर्माण का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें आपसी विश्वास, स्पष्ट संचार, पारदर्शिता, सशक्त नेतृत्व, कार्य जीवन संतुलन आदि कार्य स्थल को सकारात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे कर्मचारी अपनी पूरी क्षमता से कार्य कर संगठन की उत्पादकता बढ़ाते हैं तथा स्वयं भी फलते-फूलते हैं। अंतत: कुछ पंक्तियां जो इस लेख का सार प्रस्तुत करती हैं:

"सकारात्मक परिवेश में, मन से होता है हर काम,
संघर्ष बदल जाए अवसर में, कठिनाई हो जाए आसान,
सहयोग बढ़े और बढ़े हौसला, लक्ष्य प्राप्ति का हो संधान,
भविष्य बने और समृद्धि मिले, निरंतर बढ़े जीवन की शान"

चित्र काव्य प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली न्यूनतम 04 पंक्तियों की कविता लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। विजेता की कविता को रचियता के फोटो सहित अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा तथा रु. 1000 का पुरस्कार भी दिया जाएगा। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं।

बैंकरों के लिए स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने के उपाय

भव्य चौहान
ब्यावर शाखा
जोधपुर अंचल

बैंकिंग की तेज़-तर्रार दुनिया में, जहाँ लंबे समय तक बैठ कर काम करना और उच्च मानसिक दबाव वाली स्थितियाँ आम बात हैं, स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण काम है। हालाँकि, व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में दीर्घकालिक सफलता और खुशी के लिए स्वास्थ्य और वेलनेस को प्राथमिकता देना जरूरी है। इस लेख में, हम बैंकरों के लिए उनके जीवन में श्रेष्ठ स्वास्थ्य और संतुलित जीवन को प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए रणनीतियों और युक्तियों के बारे में विचार-विमर्श करेंगे ।

स्वास्थ्य और वेलनेस के महत्व को समझना:

वेलनेस प्राप्त करने की रणनीतियों में गोता लगाने से पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना इतना महत्वपूर्ण क्यों है, खासकर बैंकरों के लिए। बैंकिंग उद्योग की कार्यशैली शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ सकती हैं, जिससे तनाव, थकान और अक्रियाशीलता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। इसलिए अपने स्वास्थ्य में निवेश करके, हम अपनी उत्पादकता, रचनात्मकता और जीवन की समग्र गुणवत्ता को सुधार सकते हैं। आइये इसे समझने का प्रयास करते हैं -

- **शारीरिक सुख:**

1. व्यायाम को प्राथमिकता दें: शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने और तनाव कम करने के लिए नियमित व्यायाम को अपनी दिनचर्या में शामिल करना आवश्यक है। चाहे वह जिम जाना हो, दौड़ने जाना हो या योगाभ्यास करना हो, ऐसी गतिविधियाँ खोजें जिनमें आपको आनंद आता हो और उनके लिए नियमित रूप से समय निकालें। आप अपने लिए कुछ आसान वर्कआउट की एक सूची तैयार करके उसे फॉलो कर सकते हैं।

2. पौष्टिक भोजन खाएं: अपने शरीर को पौष्टिक खाद्य पदार्थों से ऊर्जा देना, ऊर्जा के स्तर और समग्र वेलनेस के लिए महत्वपूर्ण है। फलों, सब्जियों, लीन प्रोटीन और साबुत अनाज जैसे अनप्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों का विकल्प चुनें और प्रोसेस्ड एवं शक्कर युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित करें।

3. पर्याप्त नींद लें: संज्ञानात्मक क्षमता, मूड को ठीक रखने और समग्र स्वास्थ्य के लिए गुणवत्तापूर्ण नींद आवश्यक है। प्रति रात 7-9 घंटे की नींद का लक्ष्य रखें और बेहतर नींद हाइजीन को बढ़ावा देने के लिए सोने के समय को दिनचर्या में ढाल लें।

4. तनाव को प्रबंधित करें: तनाव को प्रबंधित करने के लिए स्वस्थ एवं सकारात्मक तरीके खोजें, जैसे माइंडफुलनेस मेडिटेशन, गहरी सांस लेने के व्यायाम, या उन शौक में शामिल होना जिनमें आप आनंद लेते हैं। उन गतिविधियों को प्राथमिकता दें, जो आपको रिलैक्स और आराम करने में मदद करती हैं, खासकर काम पर लंबे दिन के बाद।

- **मानसिक तंदुरुस्ती**

1. स्वयं देखभाल का अभ्यास करें: स्व-देखभाल गतिविधियों के लिए समय निकालें जो आपके मन, शरीर और

आत्मा को पोषण देती हैं। इसमें नहाना, किताब पढ़ना, बाहर समय बिताना या कोई ऐसा शौक शामिल हो सकता है जिससे आपको खुशी मिलती हो।

2. सहायता मांगें: जब आपको सहायता की आवश्यकता हो तो सहायता मांगने से न डरें। चाहे वह किसी भरोसेमंद दोस्त या परिवार के सदस्य से बात करना हो, परामर्श या चिकित्सा मांगना हो, या किसी सहायता समूह में शामिल होना हो। मदद के लिए पहुंचना ताकत का संकेत है, कमजोरी का नहीं।

3. सीमाएँ निर्धारित करें: अपने समय और ऊर्जा की सुरक्षा के लिए सीमाएँ निर्धारित करना सीखें। उन अनुरोधों को ना कहें जो आपकी प्राथमिकताओं के अनुरूप नहीं हैं, और आवश्यकता पड़ने पर कार्य सौंपने में संकोच न करें। उन गतिविधियों को प्राथमिकता दें जो आपको खुशी और संतुष्टि प्रदान करें।

4. कृतज्ञता का अभ्यास करें: अपने जीवन के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके कृतज्ञता का दृष्टिकोण विकसित करें। एक कृतज्ञता पत्रिका रखें, जहां आप हर दिन तीन चीजें लिखते हैं जिनके लिए आप आभारी हैं, या बस उन चीजों पर विचार करने के लिए एक क्षण लें, जो आपको खुशी और प्रशंसा प्रदान करती हैं।

- **कार्य और जीवन में संतुलन बनाना**

1. प्राथमिकताएँ निर्धारित करें: अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में अपने मूल मूल्यों और प्राथमिकताओं को पहचानें। अपना समय और ऊर्जा कैसे आवंटित करें, इसके बारे में निर्णय लेने के लिए एक मार्गदर्शिका (गाइड) के रूप में इन प्राथमिकताओं का उपयोग करें।

2. डाउनटाइम शेड्यूल करें: अपने कैलेंडर में डाउनटाइम शेड्यूल करके विश्राम और अवकाश गतिविधियों के लिए समय बनाएं। इन क्षणों को अपने लिए अनिवार्यत: नियोजित समय के रूप में मानें और किसी अन्य प्रतिबद्धता की तरह उनका पालन करें।

3. नियमित रूप से खुद को डिजिटल दुनिया से अनप्लग करें: आज की हाइपर-कनेक्टेड दुनिया में, खुद को लगातार सूचनाओं और सूचना अधिभार से अभिभूत महसूस करना नियमित दिनचर्या का नाम हो गया है। अपने फोन को नियमित रूप से अनप्लग/स्विच ऑफ करने, स्क्रीन से दूर रहने और अपने डाउनटाइम के दौरान काम से संबंधित कार्यों से डिस्कनेक्ट करने की आदत बनाएं।

4. यथार्थवादी अपेक्षाएँ निर्धारित करें: इस बारे में यथार्थवादी रहें कि आप किसी दिए गए दिन या सप्ताह में, काम पर और अपने निजी जीवन में क्या हासिल कर सकते हैं। स्वयं को अति समर्पित करने से बचें और उन कार्यों या परियोजनाओं को ना कहना सीखें जो आपकी क्षमताओं से परे हैं।

- **निष्कर्ष:**

एक बैंकर के रूप में स्वस्थ एवं संतुलित जीवन प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए जानबूझकर प्रयास और आत्म-देखभाल के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। शारीरिक और मानसिक वेलनेस को प्राथमिकता देकर, सीमाएँ निर्धारित करके और काम एवं जीवन की जिम्मेदारियों को संतुलित करके, बैंकर अपने जीवन की समग्र गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं और अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अधिक संतुष्टि को प्राप्त कर सकते हैं। याद रखें, आपके स्वास्थ्य में निवेश न केवल आपके लिए बल्कि आपके आस-पास के लोगों के लिए भी फायदेमंद है, जो आपको अपने जीवन के सभी पहलुओं में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम बनाता है।

"स्वस्थ जीवन, मस्त मन, है यही तुम्हारी खुशियों का अभिन्न अंग"

पुस्तक समीक्षा

हल्दीघाटी : स्वाधीनता की लड़ाई की अमर गाथा

अखिल सीतारमन गुप्ता
अधिकारी
बुलियन एक्सचेंज शाखा
मुंबई

'हल्दीघाटी', श्री श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा अमर सेनानी महाराणा प्रताप के जीवन पर रचित एक महाकाव्य है। जिसमे कवि ने कविता के माध्यम से भारत के अद्भुत वीर महाराणा प्रताप के जीवन का वर्णन किया है। सन 1576 में उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी के मैदान में महाराणा प्रताप अकबरी सेना से जा टकराए। ऐसा युद्ध हुआ की हल्दीघाटी, जिसकी मिट्टी हल्दी के रंग की पीली हुआ करती थी, कई दिनों तक लहू से लाल रही। हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप ने अपने भाले से इतिहास लिख दिया और वर्षो बाद कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने अपनी लेखनी से पुनर्जीवित कर दिया। कविवर श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित यह काव्य 17 सर्गों और परिशिष्ट में विभाजित है। हर सर्ग में नए भाव अथवा रस का रसास्पदन वाचक कर सकता है।

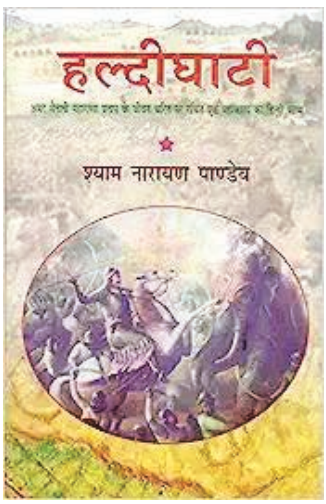

"जग में जाग्रति पैदा कर दूँ, वह मन्त्र नहींच वह तन्त्र नहीं।
कैसे वांछित कविता कर दूँ, मेरी यह कलम स्वतन्त्र नहीं?
अपने उर की इच्छा भर दूँ, ऐसा है कोई यन्त्र नहीं।
हलचल-सी मच जाये पर, यह लिखता हूँ रण षड्यन्त्र नहीं?"

महाराणा प्रताप, कुम्भलगढ़ के अभेद्य किले में जन्मा वो नायक है, जिसके संकल्पों के बीज कालांतर में आदर्शो की बुनियाद बने और परतंत्र जग में स्वाधीनता व मानवाधिकारों के लिए उनका संघर्ष-यश चिरायु हुआ। खमनोर की हल्दीरंगी माटी प्रतापी पराक्रम का यशगान करती है। वही चावंड, जावर, गोगुंदा और छप्पन की धरती उनके संकल्पों सुदूदर्श सेज है। अंतत: बन्दोली में चिर समाधी में सोये उस महायोद्धा की याद कविवर उनकी समाधी स्थली से करते हुए इस कविता का आरम्भ करते हैं। हल्दीघाटी काव्य के विषय केंद्र महाराणा प्रताप के अदम्य साहस, शौर्य व स्वातंत्र्य के वर्णन में कवि ने कुछ इस तरह से किया है:

"वण्डोली है यहीं, यहीं पर है समाधि सेनापति की।
महातीर्थ की यही वेदिका, यही अमर–रेखा स्मृति की?
एक बार आलोकित कर हा, यहीं हुआ था सूर्य अस्त।
चला यहीं से तिमिर हो गया अन्धकार–मय जग समस्त?
आज यहीं इस सिद्ध पीठ पर फूल चढ़ाने आया हूँ।
आज यहीं पावन समाधि पर दीप जलाने आया हूँ।।"

"स्वतन्त्रता का वीर पुजारी संगर–मतवाला है।
शत-शत असि के सम्मुख उसका महाकाल भाला है?
धन्य-धन्य है राजपूत वह उसका सिर न झुका है।
अब तक कोई अगर रूका तो केवल वही रूका है।।"

इस काव्य में श्यामनारायण पाण्डेय ने न सिर्फ शब्दों के माध्यम से अतीत के पन्ने में दफ़न एक इतिहास विरचित किया है, अपितु भाषा वैभव का साहित्यिक मंचन करते हुए शौर्य से अहंकार और कारुण्य से उदारता जैसे भावो का चित्रण भी किया है। पंचम सर्ग में एक ओर शोलापुर विजयी मानसिंह के अहंकार की पराकाष्ठा का वर्णन करते हुए कवि लिखते है:

"युध्द ठानकर मानसिंह ने जीत लिया शोलापुर।
भरा विजय के अहँकार से उस अभिमानी का उर।।
किसे मौत दूँच किसे जिला दूँच किसका राज हिला दूँ।
लगा सोचने किसे मींजकर रज में आज मिला दूँ।।
किसे हँसा दूँ बिजली–सा मैं, घन–सा किसै रूला दूँ?
कौन विरोधी है मेरा फांसी पर जिसे झुला दूँ।।
बनकर भिक्षुक दीन जन्म भर किसे झेलना दुख है।
रण करने की इच्छा से जो आ सकता सम्मुख है।।"
"वसुधा का कोना धरकर चाहूँ तो विश्व हिला दूँ।
गगन-मही का क्षितिज पकड़ चाहूँ तो अभी मिला दूँ।।

राणा की क्या शक्ति उसे भी रण की कला सिखा दूँ।
मृत्यु लड़े तो उसको भी अपने दो हाथ दिखा दूँ।।"

शोलापुर विजय के बाद मानसिंह का उदयपुर जाना, वहां महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह द्वारा उनका आतिथ्य व राजभोज का वृतांत आपका मन मोह लेगा। साथ ही मानसिंह का उदयपुर में अवज्ञा और एक सिपाही का मानसिंह को चेताना उस महायुद्ध का बिगुलनाद था जिसका वृतांत कविवर ने बखूबी किया है।

हम सभी ने महाराणा प्रताप के अद्भुत घोड़े चेतक का वर्णन सुना है, जो महाराणा प्रताप और मानसिह के बीच युद्ध में अपनी टापो को गज-मस्तक पर धर देता था और जिसकी स्वामिभक्ति और वेग का कोई जोड़ नहीं। चेतक हल्दीघाटी कविता का अविस्मरणीय पात्र है, जिसका जब-जब जहाँ-जहाँ कविता में उल्लेख आया कवि ने वहां-वहां अपने भाव उड़ेल दिए है। चेतक का महाराणा से कितना एकाकार था, वो इस पद्य से आपको स्पस्ट हो जायेगा:

"रण–बीच चौकड़ी भर–भरकर चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा को पाला था।।
गिरता न कभी चेतक–तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दोड़ रहा अरि–मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।।
जो तनिक हवा से बाग हिली, लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।।"

सन 1576 में महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच लड़े गये हल्दीघटी के युद्ध का वृतांत श्यामनारायण पाण्डेय के शब्द के माध्यम से चलचित्र की भांति आँखों के सामने उभर आता है। महाराणा का वो भाला, तलवार, चेतक और उस निज स्वाधीनता के युद्ध में महाराणा का साथ देनेवाले भील, हुतात्मा रामशाह, झाला मान्ना, हाकिम खां सूरी जैसे सेनानी, जिन्होंने अपने भविष्य की चिंता किये बिना इस युद्ध में अपना सर्वश्व समर्पित कर दिया। हल्दीघाटी युद्ध का वह वृतांत ना आपके दिल को दहला देगा अपितु श्यामनारायण पाण्डेय की भाषा शैली व योद्धओं का शौर्य विवरण आपको साहस व शक्ति से ओत-प्रोत कर देगा। गिरी अरावली के शिखर पर महाराणा का सजा दरबार, वो जेष्ठ की भीष्म गर्मी जब धूप की एक किरण भी आपको झुलसा दे, उस पर भीलो द्वारा मानसिंह को बंदी बनाना और महाराणा द्वारा मानसिंह को मुक्त करना और फिर हल्दीघाटी के युद्ध का गतिमान वर्णन, जहाँ भाला व तलवार भी जड़ से चेतन हो जाते है। यह काव्यात्मक वर्णन पढ़ कर कोई भी प्रेरित हो सकता है। यह बोल दृष्टव्य है:

"मेवाड़–केसरी देख रहा, केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़–दौड़ करता था रण, वह मान–रक्त का प्यासा था।।
चढक़र चेतक पर घूम–घूम करता सेना–रखवाली था।
ले महा मृत्यु को साथ–साथ, मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।"
"तनकर भाला भी बोल उठा राणा मुझको विश्राम न दे।
बैरी का मुझसे हृदय गोभ तू मुझे तनिक आराम न दे।।
खाकर अरि–मस्तक जीने दे, बैरी–उर–माला सीने दे।
मुझको शोणित की प्यास लगी बढऩे दे, शोणित पीने दे।।"
"क्या अजब विषैली नागिन थी, जिसके डसने में लहर नहीं।
उतरी तन से मिट गये वीर, फैला शरीर में जहर नहीं।
लहराती थी सिर काट–काट, बल खाती थी भू पाट–पाट।
बिखराती अवयव बाट–बाट तनती थी लोहू चाट–चाट।।"
"भाला कहता था मान कहाँ, घोड़ा कहता था मान कहाँ?
राणा की लोहित आँखों से रव निकल रहा था मान कहाँ।।
लड़ता अकबर सुल्तान कहाँ, वह कुल–कलंक है मान कहाँ?
राणा कहता था बार–बार मैं करूँ शत्रु–बलिदान कहाँ?"

अंतत: हल्दीघटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप व उनके परिवार का वन-वन भटकना, उस काल भूख से बिलखते बच्चो को देख जब महाराणा का हृदय पिघल जाता है और महाराणा करुणा की कारुण्य भरी बाते सुन संधि प्रस्ताव लिखने के लिए जब कलम उठाते है, तो उनकी महारानी द्वारा उनको रोकने का वर्णन आपको भाव-विभोर कर देंगा।

"तू भारत का गौरव है, तू जननी–सेवा–रत है।
सच कोई मुझसे पूछे, तो तू ही तू भारत है।।"

ततपश्चात भामाशाह की मदद से महाराणा का पुन: अपने किलों को वापस जीतना और परिशिष्ट में राजपूताने की गौरवमयी इतिहास गाथा, बस यही तो है हल्दीघाटी। संक्षेप में कहे तो यह सरल, सहज और ओजस्वी भाषा में लिखा है। एक बार पुष्तक पढना शुरू करने के बाद सच पूछो तो पाठक इसे समाप्त करके ही उठेगा। क्योकि कविता में रोचकता का जो भाव है, वो अटूट है, भंग नहीं हो पाता।

"क्रीड़ा होती हथियारों से, होती थी केलि कटारों से।
असि–धार देखने को ऊँगली कट जाती थी तलवारों से।।
हल्दी–घाटी का भैरव–पथ रंग दिया गया था खूनों से।
जननी–पद–अर्चन किया गया जीवन के विकच प्रसूनों से।।
अब तक उस भीषण घाटी के कण–कण की चढी जवानी है!
राणा! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।"

कुछ रोचक बातें...

अंकिता दुबे
राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

1. वर्ष 1920 की शुरुआत में एयर होस्टेस के पेशे का आरंभ हुआ था। उस समय इस पेशे से जुड़े लोगों को कूरियर (courier) के नाम से जाना जाता था।

2. ज़िप लाइन जो आजकल एडवेंचर खेल के रूप में मशहूर है, असल में 2000 वर्ष पुराना समान लाने, ले जाने का माध्यम था।

3. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अमरीकी सैनिकों को एक विशेष देश तैनात किया गया था तथा उन्हें फ्राइज़ के रूप में सस्ता पौष्टिक भोजन दिया जाता था। सैनिकों को लगा कि वे फ्रांस की सीमा पर है इसलिए उन्होंने गलती से इसका नाम फ्रेंच फ्राइज़ रख दिया। यह फ्रेंच फ्राइज़ वास्तव में बेल्जियम में बने थे।

4. आर डी बर्मन द्वारा रचित "पूछो न यार क्या हुआ हुआ" गीत की प्रस्तावना (Prelude)में नेपाली लोक गीत "चिसो चिसो हवा मा" का प्रयोग किया गया था।

5. एक तितली का दिल एक बार मिनट में 500 बार धड़कता है। वहीं एक छिपकली का हृदय एक बार में 1000 बार धड़कता है।

6. दुनिया की सबसे लम्बी गुफा वियतनाम में है। यह इतनी लंबी है कि इसमें एक नदी, जंगल और इसका अपना वातावरण है।

7. महाराष्ट्र का राजकीय पक्षी हरियल एक ऐसा पक्षी है, जो कभी धरती पर अपना पैर नहीं रखता।

8. नामीबिया में एक ऐसी जगह है, जहां अटलांटिक महासागर यहां के पश्चिमी तटीय रेगिस्तान से मिलता है। यह दुनिया का सबसे पुराना रेगिस्तान है, जो करीब साढ़े पाँच करोड साल से भी ज्यादा पुराना है। खास बात ये है कि यहाँ दिखने वाले रेत के टीले पूरी दुनिया में सबसे बड़े हैं।

9. 19वीं सदी तक एशिया में हाथियों को कैदियों और गद्दारों को फांसी देने और यातना देने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था।

10. भारत ने अपने पिछले 100000 वर्षों के इतिहास में किसी भी देश पर हमला नहीं किया है।

11. विश्व का प्रसिद्ध ग्रेनाइट मंदिर तमिलनाडु के तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर है। इस मंदिर के शिखर, ग्रेनाइट के 80 टन के टुकड़ों से बने हैं। यह भव्य मंदिर राजाराज चोल के राज्य के दौरान केवल 5 वर्ष की अवधि में (1004 ईस्वी और 1009 ईस्वी के दौरान) निर्मित किया गया था।

12. सांप सीढ़ी का खेल तेरहवीं शताब्दी में कवि संत ज्ञानदेव द्वारा तैयार किया गया था, इसे मूल रूप से मोक्षपट कहते थे। इस खेल में सीढियां वरदानों का प्रतिनिधित्व करती थीं, जबकि सांप अवगुणों को दर्शाते थे। इस खेल को कौड़ियों और पासों के साथ खेला जाता था।

बैंक में विश्व हिन्दी दिवस 2024 का आयोजन

अहमदाबाद अंचल

देहरादून अंचल

हावड़ा अंचल

खंडवा अंचल

कोयमबत्तूर अंचल

इंदौर अंचल

कोलकाता अंचल

गोवा अंचल

जबलपुर अंचल

जयपुर अंचल

धनबाद अंचल

नवी मुंबई अंचल

प्रबंधन विकास संस्थान बेलापुर

बोकारो अंचल

भागलपुर अंचल

मदुरै अंचल

मुंबई दक्षिण अंचल

लखनऊ अंचल

वाराणसी अंचल

स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज नोएडा

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी

सी. गोपाला कृष्णा
उप महाप्रबंधक
एसएलबीसी झारखंड
का.ग्र.ति: 03.12.1986

लग्नजीत दास
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ पुणे
का.ग्र.ति: 16.05.1990

एच. श्रीधर
उप महाप्रबंधक
लार्ज कॉर्पोरेट शाखा- हैदराबाद
का.ग्र.ति: 15.06.1992

अनुपम कुमार त्रेहान
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 27.06.1992

सीताराम देवसेना
उप महाप्रबंधक
दक्षिणी आंचलिक लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 27.06.1992

नीरज तिवारी
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ मुंबई
का.ग्र.ति: 30.12.1992

वेंकट कृष्ण किशोर वेल्लांकी
उप महाप्रबंधक
आंचलिक कार्यालय हुब्ली धारवाड़
का.ग्र.ति: 11.01.1993

अश्वनी कुमार मित्तल
उप महाप्रबंधक
आंचलिक कार्यालय बोकारो
का.ग्र.ति: 31.03.1993

टी.एस.एस.एन. सरमा पोगुला
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 17.05.1993

सुभाष चन्द्र मिश्रा
उप महाप्रबंधक
पूर्वी आंचलिक लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.11.1994

अमित सिंह
उप महाप्रबंधक
नई दिल्ली आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.11.1994

कुमार विकास
उप महाप्रबंधक
हांगकांग शाखा
का.ग्र.ति: 02.01.1995

अनिमेष बरुआ
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ दिल्ली
का.ग्र.ति: 02.01.1995

गुरु प्रसाद गोंड
उप महाप्रबंधक
भोपाल आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

रणवीर सिंह
उप महाप्रबंधक
कानपुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

अनिल जगदीश जाधव
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

रजनी कान्त भूयन
उप महाप्रबंधक
धार आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

हनवंत कुमार ठाकुर
उप महाप्रबंधक
आंचलिक कार्यालय वडोदरा
का.ग्र.ति: 02.01.1995

अतुल रामदास सतपुते
उप महाप्रबंधक
नवी मुंबई आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

संतोष कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

राजीव कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक
कोल्हापुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

शशि कान्त सदाभर्तीया
उप महाप्रबंधक
आगरा आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

सनत कुमार सत्पथी
उप महाप्रबंधक
कोलकाता आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

संजय कुमार खेमका
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ पुणे
का.ग्र.ति: 02.01.1995

प्रभात कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक
बर्धमान आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

राजीव सिन्हा
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

शिबा प्रसाद बिस्वाल
उप महाप्रबंधक
तेलंगाना आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

जी. उन्नीकृष्णन
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

कृष्ण बिहारी लाल
उप महाप्रबंधक
उज्जैन आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

बलराज टंडन
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ चंडीग़ढ
का.ग्र.ति: 06.01.1995

अरविंद सिंह
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 26.02.1996

राजेश रॉबर्ट
उप महाप्रबंधक
वाराणसी आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 09.04.1996

रमेश कुमार
उप महाप्रबंधक
विदर्भ आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.06.1996

कमलेश कुमार माहेश्वरी
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 17.09.1996

रमेश चन्द्र दास
उप महाप्रबंधक
बारिपदा आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

अरबिंद मिश्रा
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

मुकेश कुमार
उप महाप्रबंधक
रायगड आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

अजय कुमार मोहंती
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

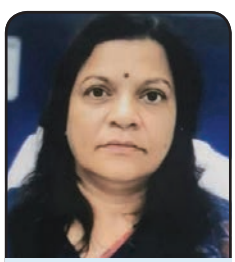

अनीता मोहंती
उप महाप्रबंधक
दिल्ली एनसीआर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

मोतीलाल सिंह
उप महाप्रबंधक
पटना आंचलिक लेखापरीक्षा कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23

बैंक ऑफ इंडिया, कोलकाता अंचल को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत पूर्वी क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 08 मार्च, 2024 को श्री निशिथ प्रामाणिक जी, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने सिलीगुड़ी शहर स्थित एक सभागार में आंचलिक प्रबंधक श्री सनत कुमार शतपथी को राजभाषा शील्ड एवं श्री निरंजन कुमार बरनवाल, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

बैंक ऑफ इंडिया, धनबाद अंचल को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत पूर्वी क्षेत्र में 'क' क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 08 मार्च, 2024 को श्री निशिथ प्रामाणिक जी, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने सिलीगुड़ी शहर स्थित एक सभागार में मुख्य प्रबंधक श्री फुदान मूर्मू को राजभाषा शील्ड एवं श्री सुब्रत बनर्जी, प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23

बैंक ऑफ इंडिया, रांची आंचलिक कार्यालय को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत पूर्वी क्षेत्र में 'क' क्षेत्र के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 08 मार्च, 2024 को श्री निशिथ प्रामाणिक जी, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने सिलीगुड़ी शहर स्थित एक सभागार में आंचलिक प्रबंधक श्री संजीव कुमार सिंह को राजभाषा शील्ड एवं श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

बैंक ऑफ इंडिया, बर्धमान अंचल को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत पूर्वी क्षेत्र में 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 08 मार्च, 2024 को श्री निशिथ प्रामाणिक जी, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने सिलीगुडी शहर स्थित एक सभागार में आंचलिक प्रबंधक श्री प्रभात कुमार सिन्हा को राजभाषा शील्ड एवं सुश्री स्वाति प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण
मुंबई, महाराष्ट्र 12,13 एवं 14 फरवरी, 2024
समन्वयक:
बैंक ऑफ़ इंडिया